रूमी की कहानियाँ

चौधरी शिवनाथसिंह शांडिल्य

सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली
शाखाएँ
दिल्ली : लखनऊ : इन्दौर : वर्धा : इलाहाबाद : कलकत्ता

कहानियाँ

अनुवादक

चौ० शिवनाथसिंह शांडिल्य

सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली
दिल्ली : लखनऊ : इन्दौर : वर्धा : इलाहाबाद : कलकत्ता

भूमिका

मौलाना मुहम्मद जलालुद्दीन कृत 'मसनवी' फ़ारसी साहित्य में अनूठा ग्रन्थ है। संसार की सर्वोत्तम पुस्तकों में उसकी गणना की जाती है। और दुनिया की प्रायः सभी जीवित भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है। उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ी हुई है कि फारसी-दाँ लोगों की दुनिया में शायद ही कोई ऐसा घर मिले जहाँ रूमी की 'मसनवी' न हो।

प्रसिद्ध विद्वान् निकलसन ने लिखा है—'मसनवी' में धार्मिक गीतों के सभी गुण वर्तमान हैं। पर्वत के गान, गुलाब के रङ्ग तथा सुगन्ध इत्यादि से पद ओत-प्रोत हैं। ईश्वर की व्यापकता सभी में दिखायी गयी है। मौलाना रूमी की कविता पढ़ने से ऐसा मालूम होता है मानों हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द-योजना हृदय को हिलानेवाली और आनंददायिनी है।

इस महान ग्रंथ में कथाओं और उपाख्यानों द्वारा भक्ति, वैराग्य, अध्यात्म, नीति आदि के उपदेश दिये गये हैं और कहने का ढंग ऐसा हृदयहारी और चमत्कारपूर्ण है कि कैसा ही शुष्क-हृदय मनुष्य क्यों न हो उसपर भी प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता और प्रत्येक कथा के अन्त में ऐसा सुन्दर परिणाम निकाला गया है कि पढ़नेवाला मुग्ध हो जाता है।

'मसनवी' बहुत बड़ा ग्रन्थ है। मैंने उसमें से कुछ चुनी हुई शिक्षाप्रद कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया है। और आशा करता हूँ कि वे पाठकों को रुचिकर होंगी।

अनुवाद करने में मैंने निम्नलिखित पुस्तकों से सहायता ली है। अतः मैं उनके लेखकों का आभारी हूँ।

१—मरातुल मसनवी (फ़ारसी): सं० क़ाजी तलम्मुज़ हुसैन।

२—हिकायाते रूमी (उर्दू): अनु० मिर्ज़ा निज़ामशाह 'लबीब'

३—सवाने उमरी-मौलाना रूमी (उर्दू): ले० मौलवी शिबली।

४—मौलाना रूमी और उनका उर्दू काव्य: ले० श्री जगदीश-चन्द्र वाचस्पति।

माछरा (मेरठ) }
२५. १. ४२ }

शिवनाथसिंह शांडिल्य

रूमी का जीवन-परिचय

महाकवि मौलाना जलालुद्दीन रूमी का जन्म फ़ारस देश के प्रसिद्ध नगर बलख़ में सन् ६०४ हिजरी में हुआ था। रूमी के पिता शेख़ बहाउद्दीन अपने समय के अद्वितीय पंडित थे। फ़ारस के बड़े-बड़े अमीर और विद्वान् उनका उपदेश सुनने और फ़तवे (व्यवस्था-पत्र) लेने आया करते थे। रूमी के जीवन पर अपने पिता का बड़ा प्रभाव पड़ा था और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी उन्हींके द्वारा हुई थी। तत्कालीन फ़ारस-सम्राट् ख्वारज़मशाह इनके बड़े भक्त थे। लेकिन एक बार किसी मामले में सम्राट् से इनका मतभेद हो गया। अतः उन्होंने बलख़ नगर छोड़ दिया। बादशाह ने बहुत कुछ अनुनय-विनय की परन्तु उन्होंने एक न सुनी। जिस समय वे बलख़ से रवाना हुए, उनके साथ तीन सौ विद्वान् मुरीद थे। जहाँ कहीं वे गये लोगों ने उनका हृदय से स्वागत किया और उनके उपदेशों से लाभ उठाया।

इसी तरह यात्रा करते हुए सन् ६१० हिजरी में वे नेशाँपुर नामक नगर में पहुँचे। वहाँ के प्रसिद्ध विद्वान् ख़्वाजा फ़रीदउद्दीन अत्तार ने उनके आगमन का हाल सुना तो सेवा में उपस्थित हुए। उस समय बालक जलालुद्दीन (मौलाना रूमी) की उम्र ६ वर्ष की थी। ख़्वाजा अत्तार ने जब उन्हें देखा तो बहुत खुश हुए और उनके पिता से कहा—"यह बालक एक दिन अवश्य महान् पुरुष होगा। इसकी शिक्षा और देख-रेख में कमी न करना।" ख्वाजा अत्तार ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मसनवी अत्तार' की एक प्रति भी बालक रूमी को प्रेमोपहार के रूप में भेंट की। वहाँ से शेख़ बहाउद्दीन भ्रमण करते हुए बग़दाद पहुँचे और कुछ दिन वहाँ रहे। फिर वहाँसे हजाज़ और शाम होते हुए लाइन्दा पहुँचे। यहाँ मौलाना रूमी का विवाह एक प्रतिष्ठित कुल की कन्या से हुआ। उस

समय उनकी उम्र १८ वर्ष की थी। इसी अर्से में बादशाह ख़्वारज़मशाह का देहान्त हो गया और शाह अलाउद्दीन क़ैकबाद राजसिंहासन पर बैठा। उसने अपने मुख्य कर्मचारियों को भेजकर शेख़ बहाउद्दीन से राजधानी में आने की प्रार्थना की। वह सन् ६२४ हिजरी में अपने पुत्र सहित क़ौनिया की तरफ़ रवाना हुए। जब शहर के क़रीब पहुँचे तो बादशाह स्वयं मुख्य कर्मचारियों सहित स्वागत के लिए आये और बड़े सम्मान के साथ राजधानी में लिवा ले गये और एक आलीशान महल में ठहराया। यहाँ वह चार वर्ष तक रहे। सन् ६२८ हिजरी में उनका देहान्त हो गया।

मौलाना रूमी अपने पिता के जीवनकाल में उनके विद्वान् शिष्य सैयद बरहानउद्दीन से पढ़ा करते थे। पिता की मृत्यु के बाद वह दमिश्क और हलब के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए चले गये और लगभग १५ वर्ष बाद वापस लौटे। उस समय उनकी उम्र चालीस वर्ष की हो गयी थी।

अब मौलाना रूमी की विद्वता और सदाचार की इतनी प्रसिद्धि हो गयी थी कि देश देशान्तरों से लोग उनके दर्शन करने और उपदेश सुनने आया करते थे। रूमी भी रातदिन लोगों को सन्मार्ग दिखाने और उपदेश देने में लगे रहते। इसी अर्से में उनकी भेंट विख्यात साधु शम्स तबरेज़ से हुई।

मौलाना रूमी और शम्स तबरेज़ की मुलाक़ात के सम्बन्ध में कई दन्त-कथाएँ प्रचलित हैं। मौलवी शिबली ने एक प्रसिद्ध फ़ारसी पुस्तक के आधार पर इस घटना को इस तरह लिखा है कि एक दिन मौलाना रूमी घर में तशरीफ़ रखते थे। पास में विद्यार्थी बैठे थे। चारों तरफ किताबों का ढेर लगा हुआ था। संयोग से शम्सतबरेज़ किसी तरफ़ से आ निकले और सलाम करके बैठ गये। किताबों की तरफ़ इशारा करके मौलाना से पूछा "यह क्या है?" मौलाना ने फ़रमाया—"यह वह चीज़ है जिसको तुम, नहीं जानते।" यह कहना था कि तमाम किताबों में आग लग गयी। मौलाना ने आश्चर्य से कहा, "यह क्या?" शम्सतबरेज़ ने जवाब दिया, "यह वह चीज है जिसको तुम नहीं जानते।"

बस शम्सतबरेज़ तो यह कहकर किसी तरफ निकल गये और आँखों से ओझल होगये उधर मौलाना का यह हाल हुआ कि रात दिन 'शम्स, शम्स' की रटन थी। आख़िर बड़ी तलाश के बाद उनका पता चला, और मौलाना रूमी उन्हें क़ौनिया में लिवा लाये। यहाँ रहकर उन्होंने रूमी को अध्यात्म-विद्या की शिक्षा दी और उसके गुप्त रहस्य बतलाये।

मौलाना रूमी पर उनकी शिक्षाओं का ऐसा प्रभाव पड़ा कि रात-दिन आत्मचिन्तन और साधना में संलग्न रहने लगे। उपदेश, फ़तवे और पढ़ने-पढ़ाने का सब काम बन्द कर दिया। जब उनके भक्तों और शिष्यों ने यह हालत देखी तो उन्हें सन्देह हुआ कि शम्सतबरेज़ ने मौलाना पर जादू कर दिया है। अतः वे उस ब्रह्मनिष्ठ साधु के विरुद्ध हो गये। और यह बदगुमानी यहाँ तक बढ़ी कि इन मूर्खों ने उनका बध कर डाला। इस दुष्कृत्य में मौलाना रूमी के छोटे बेटे इलाउद्दीन मुहम्मद का भी हाथ था। इस हत्या से सारे देश में शोक छा गया और हत्यारों के प्रति रोष और घृणा प्रगट की गयी। मौलाना रूमी को तो इस दुर्घटना से ऐसा दुःख हुआ कि वे संसार से विरक्त से हो गये और एकान्तवास करने लगे। उसी समय उन्होंने अपने प्रिय शिष्य मौलाना हसामउद्दीन चिल्पी के आग्रह पर संसारप्रसिद्ध ग्रन्थ 'मसनवी' की रचना शुरू की।

कुछ दिन बाद वह बीमार हो गये और बीमारी भी ऐसी थी कि वह फिर स्वस्थ नहीं हो सके। जब लोगों ने उनके रोग-ग्रस्त होने का समाचार सुना तो वे हज़ारों की संख्या में दर्शनों के लिए आने लगे। एक दिन मौलाना सदरउद्दीन उनकी सेवा में उपस्थित हुए और जब ऐसी नाजुक हालत देखी तो चरणों में गिर पड़े और प्रार्थना करने लगे—"ऐ खुदा मौलाना को शफ़ा (स्वस्थता) अता कर।"

मौलाना रूमी ने कहा—"शफ़ा तुम्हारे लिए मुबारिक हो। आशिक़ (प्रेमी) और माशूक़ (प्रेमपात्र) में सिर्फ़ एक पर्दा बाक़ी रह गया है। क्या तुम नहीं चाहते कि यह भी उठ जाये ?" यह शब्द सुनकर सदर-

उद्दीन को और भी दुःख हुआ और वे फूट-फूटकर रोने लगे।

उसी दिन शाम को उनका देहान्त हो गया। यह सन् ६७२ हिजरी की घटना है। मौलाना रूमी की उम्र उस समय ६८ वर्ष की थी।

जब यह दुखद समाचार लोगों ने सुना तो सारे देश में हाहाकार मच गया। मौलाना की मृत्यु पर जैसा शोक मनाया गया वैसा सारे फ़ारस देश में किसी की मृत्यु पर नहीं मनाया गया था। मारे शोक के लोग दीवाने हो रहे थे। कोई कपड़े फाड़ता था, कोई छाती पीटता था, और कोई अपना सिर धुनता था। अर्थी के साथ सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोग थे। यहूदी अपनी पवित्र पुस्तक 'तोरीत' का पाठ करते जाते थे, ईसाई 'इंजील' सुनाते जा रहे थे और मुसलमान 'कुरान शरीफ़' पढ़ते जाते थे।

जब अर्थी कब्रिस्तान में पहुँची तो बादशाह ने यहूदियों से पूछा—"तुम्हारा मौलाना से क्या सम्बन्ध था?" उन्होंने जवाब दिया "यदि वह तुम्हारा (मुसलमानों का) मुहम्मद था तो हमारा मूसा था।" ईसाइयों ने कहा कि "यदि तुम्हारा मुहम्मद और मूसा था तो हमारा ईसा था।" वास्तव में मौलाना रूमी ने मतमतान्तरों के झगड़ों को छोड़ कर सर्वात्मवाद को अपना लिया था, उन्हें किसी मज़हब का पक्षपात नही था। वे मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों को एक निगाह से देखते थे। और सभी धर्मों और श्रेणियों के लोग उनके सत्संग से लाभ उठाते थे। प्राणिमात्र को सुख पहुँचाना और ईश्वर चिन्तन में मग्न रहना ही उनका मज़हब था। ऐसे समदर्शी और सर्वात्मवादी महापुरुष की मृत्यु से सब श्रेणी के लोगों में शोक छा जाना अनिवार्य्य था।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी का मज़ार कौनिया में बना हुआ है, जहाँ हज़ारों यात्री ज़ियारत के लिए जाते हैं।

सूची

रूमी की कहानियाँ

: १ :

चोर बादशाह

बादशाह महमूद का नियम था कि रात को भेष बदलकर ग़ज़नी की गलियों में घूमा करता था। एक रात को उसे कुछ आदमी छिपछिप कर चलते दिखाई दिये। वह भी उनकी तरफ़ बढ़ा। चोरों ने उसे देखा तो वे ठहर गये और उससे पूछने लगे कि भाई तुम कौन हो? और रात के समय किसलिए घूम रहे हो। बादशाह ने कहा—"मैं भी तुम्हारा भाई हूँ और आजीविका की तलाश में निकला हूँ"। चोर बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि तूने बड़ा अच्छा किया जो हमारे साथ आ मिला। जितने आदमी अधिक हों उतनी ही अधिक सफलता मिलती है। चलो, किसी साहूकार के घर चोरी करें। जब वे लोग चलने लगे तो उनमें से एक ने कहा पहले यह निश्चय होना चाहिए कि कौन आदमी किस काम को अच्छी तरह कर सकता है जिससे हम एक-दूसरे के गुणों को जान जाएँ और जो ज्यादा हुनरमन्द हो उसे नेता बनायें।

यह सुनकर हर एक ने अपनी-अपनी खूबियाँ बतलायीं।

एक बोला—"मै कुत्तों की बोली पहचानता हूँ। वे जो कुछ कहें उसे मैं अच्छी तरह समझ लेता हूँ। हमारे काम में कुत्तों से बड़ी अड़चन पड़ती है। हम यदि उनकी बोली जान लें तो हमारा ख़तरा कम हो सकता है और मैं इस काम को बड़ी अच्छी तरह कर सकता हूँ।"

दूसरा कहने लगा—"मेरी आँखों में ऐसी शक्ति है कि जिसे अँधेरे में देख लूँ उसे फिर कभी नहीं भूल सकता। और दिन के देखे को अँधेरी रात में पहचान सकता हूँ। बहुत से लोग हमें पहचानकर पकड़वा दिया करते हैं। मैं ऐसे लोगों को तुरन्त भाँप लेता हूँ और अपने साथियों को सावधान कर देता हूँ। इस तरह हमारी रक्षा हो जाती है।"

तीसरा बोला—"मुझमें ऐसी शक्ति है कि मज़बूत से मज़बूत दीवार में भी सेंध लगा सकता हूँ और यह काम मैं ऐसी फुर्ती और सफ़ाई से करता हूँ कि सोनेवालों की आँखें नहीं खुल सकतीं और घण्टों का काम मिनटों में हो जाता है।"

चौथा बोला—"मेरी सूँघने की शक्ति ऐसी विचित्र है कि ज़मीन में गड़े हुए धन को वहाँ की मिट्टी सूँघकर ही बता सकता हूँ। मैंने इस काम में इतनी योग्यता प्राप्त की है कि शत्रु भी सराहना करते हैं। लोग प्रायः धन को धरती में ही गाड़कर रखते हैं। इस वक्त यह हुनर बड़ा काम देता है। मैं इस विद्या का पूरा पंडित हूँ। मेरे लिए यह काम बड़ा सरल है।"

पाँचवें ने कहा—"मेरे हाथों में ऐसी शक्ति है कि ऊँचे से ऊँचे

महलों पर बिना सीढ़ी के चढ़ सकता हूँ और ऊपर पहुँचकर अपने साथियों को भी चढ़ा सकता हूँ। तुममें तो कोई ऐसा नहीं होगा जो यह काम कर सके।"

इस तरह जब सब लोग अपने-अपने गुण बता चुके तो नये चोर से बोले कि तुम भी अपना कमाल ज़ाहिर करो जिससे हमें अन्दाज़ा हो कि तुम हमारे काम में कितनी सहायता कर सकते हो। बादशाह ने जब यह सुना तो खुश होकर कहने लगा—"मुझमें ऐसा गुण है जो तुममें से किसीमें भी नहीं है। और वह गुण यह है कि मैं अपराधों को क्षमा करा सकता हूँ। अगर हम लोग चोरी करते पकड़े जायें तो अवश्य सज़ा पायेंगे। परन्तु मेरी दाढ़ी में यह खूबी है कि तुम चोरी करके भी साफ़ बच सकते हो। देखो कैसी बड़ी ताकत है मेरे हाथ में!'

बादशाह की यह बात सुनकर सबने एक स्वर में कहा भाई, तू ही हमारा नेता है। हम सब तेरी ही अधीनता में काम करेंगे ताकि अगर कहीं पकड़े जायें तो बख्शे जा सकें। हमारा बड़ा सौभाग्य है कि तुम-जैसे शक्तिशाली पुरुष हमें मिले। इस तरह सलाह करके ये लोग वहाँ से चले। जब बादशाह के महल के पास पहुँचे तो कुत्ता भूँका। वह कह रहा था कि "बादशाह है।" चोर ने कुत्ते की बोली पहचानकर साथियों से कहा कि बादशाह है इसलिए सावधान होकर चलना चाहिए। मगर किसीने नहीं मानी। जब नेता आगे बढ़ता चला गया तो दूसरों ने भी उसके संकेत की कोई परवा नहीं की। बादशाह के

महल के नीचे पहुँचकर सब रुक गये। और वहीं चोरी करने का इरादा किया। दूसरा चोर उछलकर महल पर चढ़ गया और फिर उसने दूसरे चोरों को भी खींच लिया। महल के भीतर घुसकर सेंध लगायी और खूब लूट हुई। जिसके जो हाथ लगा समेटता गया। जब लूट चुके तो चलने की तैयारी हुई। जल्दी-जल्दी नीचे उतरे और अपना-अपना रास्ता लिया। बादशाह ने सबका नाम-धाम पूछ लिया था। चोर माल-असबाब लेकर चंपत होगये।

बादशाह ने मन्त्री को आज्ञा दी कि तुम अमुक स्थान में तुरन्त सिपाही भेजो और फ़लाँ-फ़लाँ लोगों को गिरफ्तार करके मेरे सामने हाज़िर करो। मन्त्री ने फ़ौरन सिपाही भेज दिये। चोर पकड़े गये और बादशाह के सामने पेश किये गये। जब इन लोगों ने बादशाह को देखा तो दूसरे चोर ने कहा कि बड़ा ग़ज़ब हो गया! रात चोरी में बादशाह हमारे साथ था और यह वही नया चोर था जिसने कहा था कि "मेरी दाढ़ी में वह शक्ति है कि उसके हिलते ही अपराध क्षमा हो जाते हैं"। सब लोग साहस करके आगे बढ़े और बादशाह का अभिवादन किया। बादशाह ने पूछा—"तुमने चोरी की है?" सबने एक स्वर में जवाब दिया-"हाँ हजूर! यह अपराध हमसे ही हुआ है।" बादशाह ने पूछा—"तुम लोग कितने थे?" चोरों ने कहा—"हम कुल छः थे।"

बादशाह ने पूछा—"छठा कहाँ है?" चोरों ने कहा—"अन्नदाता,

गुस्ताख़ी माफ़ हो। छठे आप ही थे।" चोरों की यह बात सुनकर सब दरबारी अचंभे में रह गये। इतने में बादशाह ने चोरों से फिर पूछा--"अच्छा अब तुम क्या चाहते हो ?"

चोरों ने कहा—"अन्नदाता हममें से हर एक ने अपना-अपना काम कर दिखाया। अब छठे की बारी है। हुजूर ने फ़रमाया था कि मेरी दाढ़ी में पापों के क्षमा कराने की शक्ति है। इसलिए अब आप अपना हुनर दिखायें जिससे हम अपराधियों की जान बचे।"

यह सुनकर बादशाह मुसकराया और बोला—"अच्छा ! तुमको माफ़ किया जाता है। आगे से ऐसा काम मत करना।"

संसार का बादशाह परमेश्वर तुम्हारे आचरणों को देखने के लिए सदैव तुम्हारे साथ रहता है। उसको साथ समझकर तुम्हें सदैव उससे डरते रहना चाहिए और बुरे कामों की ओर कभी ध्यान नहीं देना चाहिए।

: २ :

अन्धा, बहरा और नंगा

एक बड़े भारी शहरमें तीन आदमी ऐसे थे जो अनुभव-हीन होने पर भी अनुभवी थे। एक तो उनमें दूर की चीज़ देख सकता था पर आँखों से अंधा था। हज़रत सुलेमान के दर्शन करने में तो इसकी आँखें असमर्थ थीं परन्तु चींटी के पाँव देख लेता था। दूसरा बहुत तेज सुननेवाला, परन्तु बिल्कुल बहरा था। तीसरा ऐसा नंगा जैसे चलता-फिरता मुर्दा। लेकिन इसके कपड़ों के पल्ले बहुत लम्बे-लम्बे थे।

अन्धे ने कहा—"देखो एक दल आ रहा है। मैं देख रहा हूँ कि वह किस जाति के लोगों का है, और इसमें कितने आदमी हैं।" बहरे ने कहा—"मैंने भी इनकी बातों की आवाज़ सुनी।" नंगे ने कहा "भाई मुझे यह डर लग रहा है कि कहीं यह मेरे लम्बे-लम्बे कपड़े न कतर लें।"

अन्धे ने कहा—"देखो वे लोग निकट आ गये हैं। अरे! जल्दी उठो। मार पीट या पकड़-धकड़ से पहले ही निकल भागें।" बहरे ने कहा—"हाँ, इनके पैरों की आवाज़ निकट होती जाती है।"

तीसरा बोला "ए दोस्तो ! होशियार हो जाओ और भागो कहीं ऐसा न हो वे मेरा पल्ला कतर लें। मैं तो बिल्कुल ख़तरे में हूँ।"

मतलब यह है कि तीनों शहर से भागकर बाहर निकले और दौड़कर एक गाँव में पहुँचे। इस गाँव में उन्हें एक मोटा-ताज़ा मुर्ग़ा मिला। लेकिन वह बिल्कुल हड्डियों की माला बना हुआ था। ज़रा सा भी मांस इसमें नहीं था। अन्धे ने इसे देखा, बहरे ने इसकी आवाज़ सुनी और नंगे ने पकड़कर इसे पल्ले में ले लिया। वह मुर्ग़ा मरकर सूख गया था और कौवे ने इसमें चोंच मारी थी। इन तीनों ने एक देगची मँगवायी। जिसमें न मुँह था न पेंदा। बस इसे चूल्हे पर चढ़ा दिया। इन तीनों ने वह मोटा ताज़ा मुर्ग़ा देगची में डाला और पकाना शुरू किया और इतनी आँच दी कि सारी हड्डियाँ गल कर हलवा हो गयी। फिर जिस तरह शेर अपना शिकार खाता है इसी तरह उन तीनों ने अपना मुर्ग़ा खाया। तीनों ने हाथी की तरह तृप्त होकर खाया और फिर तीनों उस मुर्ग़े को खाकर बड़े डील-डौलवाले हाथी की तरह मोटे हो गये। इनका मुटापा इतना बढ़ा कि संसार में न समाते थे। परन्तु इस मोटेपन के बावजूद भी दरवाजे के सूराख़ में से निकल जाते थे।

इसी तरह संसार के-मनुष्यों को तृष्णा का रोग हो गया है कि वह दुनिया की प्रत्येक वस्तु को भले ही वह कितनी ही गन्दी हो पर प्रगट में सुन्दर हो अपने पेट में उतारने की इच्छा रखते हैं। लेकिन दूसी तरफ़

यह हाल है कि बिना मृत्यु के मार्ग पर चले इन्हें चारा नहीं और वह अजीब रास्ता है कि इन्हें दिखाई नहीं देता। प्राणियों के दल के दल इसी सूराख़ से निकल जाते हैं और वह सूराख़ नज़र नहीं आता। जीवों का यह समूह इसी द्वार के छिद्र में घुस जाता है और छिद्र तो क्या दर-वाज़ा तक भी दिखाई नहीं देता और इस कथा में बहरे का उदाहरण यह है कि अन्य प्राणियों की मृत्यु का समाचार तो वह सुनता है। परन्तु अपनी मौत से बे ख़बर है।

तृष्णा का उदाहरण उस अन्धे से दिया गया है जो अन्य मनुष्यों के थोड़े-थोड़े दोष तो देखता है लेकिन अपने दोष नज़र नहीं आते। नंगे की मिसाल यह है कि वह स्वयं नंगा ही आया है और नंगा ही जाता है। वास्तव में उसका अपना कुछ नहीं है। परन्तु सारी उम्र मिथ्या भ्रम में पड़कर समाज की चोरी के भय से डरता रहता है। मृत्यु के समय तो ऐसा मनुष्य और भी ज़्यादा तड़पता है। परन्तु इसकी आत्मा खूब हँसती है कि जीवनकाल में यह सदैव का नंगा मनुष्य कौनसी वस्तु के चुराये जाने के भय से डरता था। इसी समय धनी मनुष्य को तो यह मालूम होता है कि वास्तव में वह बिल्कुल निर्धन था। लोभी को यह पता चलता है कि सारा जीवन अज्ञानता में नष्ट होगया।

इसलिए ए मनुष्य, तू अपने जीवन में इस बात को अच्छी तरह समझ जा कि परलोक में तेरा क्या परिणाम होगा और विद्याओं के जानने से अधिक तेरे लिए यह अच्छा है कि तू अपने स्वरूप को जाने।

: ३ :

चौपायों की बोली

एक युवक ने हज़रत मूसा से चौपायों की भाषा सीखने की इच्छा प्रकट की ताकि जंगली पशुओं की वाणी से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करे, क्योंकि मनुष्य की सारी वाक्शक्ति तो छल-कपट में लगी रहती है। सम्भव है पशु अपने पेट भरने का कोई और उपाय करते हों।

मूसा ने कहा—"इस विचार को छोड़ दे क्योंकि इसमें तरह तरह के ख़तरे हैं। पुस्तकों और वाणियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के बजाय ईश्वर से ही प्रार्थना कर कि वह तेरे ज्ञान-चक्षु खोल दे।" परन्तु जितना हज़रत मूसा ने इसे मना किया, उतनी ही उसकी इच्छा प्रबल होती गयी। इस आदमी ने निवेदन किया कि जबसे आपको दिव्य ज्योति प्राप्त हुई है किसी वस्तु का भेद बिना प्रगट हुए नहीं रहा है। किसी को निराश करना आपके दयालु स्वभाव के विपरीत है। आप ईश्वर के प्रतिनिधि हैं। यदि मुझे इस विद्या के प्राप्त करने से रोकते हैं तो मुझे बड़ा दुःख होगा। हज़रत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि "ऐ प्रभु ! मालूम

होता है कि यह बुद्धिमान मनुष्य शैतान के हाथ में खेल रहा है। यदि मैं इसे पशुओं की बोली सिखादूँ तो इसका अनिष्ट होता है और यदि न सिखाऊँ तो इसके हृदय को ठेस पहुँचती है।" ईश्वर की आज्ञा हुई कि "ऐ मूसा! तुम इसे ज़रूर सिखाओ क्योंकि हमने कभी किसी की प्रार्थना नहीं टाली।"

हज़रत मूसा ने बड़ी नर्मी से इसे समझाया कि तेरी इच्छा पूरी हो जायेगी परन्तु अच्छा यह है कि ईश्वर से डरे और इस विचार को छोड़ दे क्योंकि शैतान की प्रेरणा से तुझे यह खयाल पैदा हुआ है। व्यर्थ की विपत्ति मोल न ले क्योंकि पशुओं की बोली समझने से तुझपर बड़ी आफ़त आयेगी। इसने निवेदन किया कि "बहुत अच्छा। सारे जानवरों की बोली न सही कुत्ते की बोली जो मेरे दरवाज़े पर रहता है, और मुर्ग़ की बोली जो घर में पला हुआ है जान लूँ तो यही काफ़ी है।" हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि अच्छा, ले आज से इन दोनों की बोली समझने का ज्ञान तुझे प्राप्त होगया।

अगले दिन प्रातःकाल वह परीक्षा के लिए दरवाज़े पर खड़ा होगया। दासी ने भोजन लाकर सामने रखा। एक बासी रोटी का टुकड़ा जो बच रहा था नीचे गिर पड़ा। मुर्ग़ा तो ताक में लगा हुआ था ही तुरन्त उड़ा ले गया। कुत्ते ने शिकायत की—"तू कच्चे गेहूँ भी चुग सकता है। मैं दाना-दुनका नहीं चुग सकता। ऐ दोस्त! यह ज़रा-सा रोटी का टुकड़ा जो वास्तव में हमारा हिस्सा है वह भी तू उड़ा लेता है।"

मुर्ग़ ने यह सुनकर कहा कि "ज़रा सब्र कर और इसका अफ़सोस न कर। ईश्वर तुझको इससे बढ़िया भोजन देगा! कल हमारे मालिक का घोड़ा मर जायेगा। ख़ूब पेट भर कर खाना। घोड़ों की मौत कुत्तों का त्यौहार है, और बिना परिश्रम और मेह-नत के ख़ूब भोजन मिलता है।"

मालिक अब मुर्ग़ की बोली समझने लगा था। उसने यह सुनते ही घोड़ा बेच डाला और दूसरे दिन जब भोजन आया तो मुर्ग़ा फिर रोटी का टुकड़ा उड़ा ले गया। और कुत्ते ने फिर शिकायत की—"ऐ बातूनी मुर्ग़! तू बड़ा झूठा है। अरे ज़ालिम! तूने तो कहा था कि घोड़ा मर जायेगा वह कहाँ मरा? तू अभागा है! सत्य से वञ्चित है।" जानकार मुर्ग़ ने जवाब दिया—"यह घोड़ा दूसरी जगह मर गया। मालिक घोड़ा बेचकर हानि उठाने से बच गया और अपना नुकसान दूसरों पर डाल दिया लेकिन कल इसका ऊँट मर जायेगा तो कुत्तों के पौबारह हैं।"

यह सुनकर तुरन्त मालिक ने ऊँट को भी बेच दिया और उसकी मृत्यु के शोक और हानि से छुटकारा पा लिया। तीसरे दिन कुत्ते ने मुर्ग़ से कहा—"अरे! झूठों के बादशाह! कबतक झूठ बोलता रहेगा। अरे कुपात्र! तू बड़ा कपटी है।" मुर्ग़ ने कहा—"मालिक ने जल्दी से ऊँट को बेच डाला। लेकिन कल इसका ग़ुलाम मरेगा और इसके सम्बन्धी खैरात की रोटियाँ फ़क़ीरों को बाँटेंगे और कुत्तों को भी ख़ूब मिलेंगी।" यह सुनते ही मालिक ने गुलाम को भी बेच दिया और नुक़सान से बचकर बहुत खुश हुआ।

वह खुशी से फूला नहीं समाता था, और बार-बार ईश्वर को धन्यवाद देता था कि मैं लगातार तीन विपत्तियों से बच गया। जबसे मैं मुर्गों और कुत्तों की बोलियाँ समझने लगा हूँ तबसे मैंने यमराज की आँखों में धूल झोंक दी है।

चौथे दिन निराश कुत्ते ने कहा—"अरे झूठे बकवादी मुर्ग़े! तेरी भविष्यवाणियों का क्या हुआ? यह तेरा कपट-जाल कबतक चलेगा? तेरी सूरत से ही झूठ टपकता है।" मुर्ग़े ने कहा—"तोबा! मेरी जाति कभी झूठ नहीं बोलती। भला यह कैसे सम्भव हो सकता है? असली बात यह है कि वह गुलाम ख़रीदार के पास जाकर मर गया और ख़रीदार को नुक़सान हुआ। मालिक ने ख़रीदार को तो हानि पहुँचायी लेकिन अब खूब समझले कि अब खुद उसकी जान पर आ बनी है। अब कल मालिक ही खुद मर जायेगा। तब इसके उत्तराधिकारी गाय की कुरबानी करेंगे। मांस और रोटियाँ, फ़कीरों और कुत्तों को बाँटी जायेंगी। फिर खूब मौज से माल उड़ाना। घोड़े, ऊँट और गुलाम की मौत इस मूर्ख के प्राणों का बदला था। माल के नुक़सान और रंज से तो बच गया। लेकिन अपनी जान गँवायी।"

मालिक मुर्ग़े की भविष्यवाणी को कान लगाकर सुन रहा था। दौड़ा-दौड़ा हज़रत मूसा के दरवाज़े पर पहुँचा और माथा टेककर फ़रियाद करने लगा—"ऐ खुदा के नायब मुझपर दया करो।"

हज़रत मूसा ने फ़रमाया—"जा अब अपने को भी बेचकर नुकसान से बच जा।" तू तो इस काम में खूब चालाक हो गया है।

अब की बार भी अपनी हानि दूसरे लोगों के सिर डाल दे और अपनी थैलियों को दौलत से भरले। जो भवितव्यता तुझे इस समय शीशे में दिखाई दे रही है मैं उसको पहिले ही ईंट में देख चुका था।"

उसने रोना-धोना शुरू किया और कहा—"ऐ दयामूर्ति! मुझे निराश न कीजिए। मुझसे अनुचित व्यवहार हुआ है। परन्तु आप क्षमा करें।" हज़रत मूसा बोले—"अब तो कमान से तीर निकल चुका और लौट आना सम्भव नहीं है। अलबत्ता मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मरते समय तू ईमान सहित मरे। जो ईमानदार मरे, वह जिन्दा रहता है और जो ईमान साथ ले जाये वह अमर हो जाता है।"

उसी समय उसका जी मितलाने लगा। दिल उलट-पुलट होने लगा। थोड़ी देर में वमन हुई। वह कै मौत की थी। उसे चार आदमी उठाकर ले गये। परन्तु उस समय उसे होश नहीं था। हज़रत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि "हे प्रभु, इसे ईमान से वञ्चित न कर। यह गुस्ताखी इसने भूल में की थी। मैंने इसे बहुत समझाया कि यह विद्या तेरे योग्य नहीं। लेकिन वह मेरी नसीहत को टालने की बात समझा।" ईश्वर ने इस आदमी पर दया की और हजरत मूसा की दुआ कबूल हुई।

: ४ :

साधु की कथा

एक साधु पहाड़ों पर रहा करता था। न उसके स्त्री थी और न बच्चे। वह एकान्तवास में ही मगन रहा करता था।

इस पहाड़ की घाटियों में सेब, अमरूद, अनार इत्यादि फलदार वृक्ष बहुत थे। साधु का भोजन यही मेवे थे। इनको छोड़ और कुछ नहीं खाता था। एक बार इस साधु ने प्रतिज्ञा की कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता! मैं इन वृक्षों से स्वयं मेवे नहीं तोड़ूँगा और न किसी दूसरे से तोड़ने के लिए कहूँगा। मैं पेड़ पर लगे हुए मेवे नहीं खाऊँगा—सिर्फ वही मेवे खाऊँगा जो हवा के झोंके से झड़कर गिर गये हों।

दैवयोग से पाँच दिन तक कोई फल हवा से नहीं झड़ा। और भूख की आग ने साधु को बेचैन कर दिया। एक डाली की फुनगी पर अमरूद लगे हुए देखे। परन्तु सन्तोष से काम लिया और अपने मन को वश में किये रहा। इतने में हवा का एक ऐसा झोंका आया कि शाख की फुनगी नीचे झुक आयी तब तो उसका मन वश में नहीं रहा और भूख ने प्रतिज्ञा तोड़ने के

लिए विवश कर दिया। बस फिर क्या था वृक्ष से फल तोड़ते ही इसकी प्रतिज्ञा टूट गयी। साथ ही ईश्वर का कोप भी प्रगट हुआ। क्योंकि उसकी आज्ञा है कि जो प्रतिज्ञा करो उसे अवश्य पूरा करो।

इसी पहाड़ में शायद पहले से ही चोरों का एक दल रहा करता था और यहीं वह लोग चोरी का माल आपस में बाँटा करते थे। दैवयोग से उसी समय चोरों के यहाँ मौजूद होने की खबर पाकर कोतवाली के सिपाहियों ने इस पहाड़ी को घेर लिया और चोरों के साथ साधु को भी पकड़कर हथकड़ी-बेड़ी डालदी। इसके बाद कोतवाल ने जल्लाद को आज्ञा दी कि इनमें से हर एक के हाथ पाँव काट डालो। जल्लाद ने सब का बाँया पाँव और दायाँ हाथ काट डाला। चोरों के साथ साधु का हाथ भी काट डाला गया और अब पैर काटने की बारी आनेवाली थी कि अचानक एक सवार घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और सिपाहियों को ललकार कर कहा "अरे कुत्तो! देखो यह अमुक साधु और ईश्वरभक्त हैं इनका हाथ क्यों काट डाला?" यह सुनकर सिपाही ने अपने कपड़े फाड़ डाले और जल्दी से कोतवाल की सेवा में उपस्थित होकर इस घटना की सूचना दी। कोतवाल यह सुनकर नंगे पाँव माँफी माँगता हुआ हाज़िर हुआ कि महाराज! क्षमा कीजिए! ईश्वर जानता है कि मुझे खबर नहीं थी। ऐ दयालु! मुझे माफ़ कर दीजिए।

साधु बोला—"मैं इस विपत्ति का कारण जानता हूँ और मुझे अपने पापों का ज्ञान है। मैंने बेईमानी से अपना मान घटाया

और मेरी ही प्रतिज्ञा ने मुझे इसकी कचहरी में धकेल दिया। मैंने जान बूझकर प्रतिज्ञा भंग की। इसलिए इसकी सज़ा में मेरे हाथ पर आफ़त आयी। हमारा हाथ, हमारा पाँव, और हमारा शरीर तथा प्राण मित्र की आज्ञा पर निछावर हो जाये तो बड़े सौभाग्य की बात है। तुझसे कोई शिकायत नहीं, क्योंकि तुझे इसका पता नहीं था।"

संयोग से एक मनुष्य भेंट करने के अभिप्राय से इनकी झोंपड़ी में घुस आया। देखा कि साधु दोनों हाथों से अपनी झोली सीं रहे हैं।

साधु ने कहा—"अरे भले आदमी! तू बिना सूचना किये मेरी झोंपड़ी में कैसे आ गया।" इसने निवेदन किया कि प्रेम और दर्शनों की उत्कंठा के कारण यह अपराध हो गया।

साधु ने कहा—"अच्छा तू चला आ। लेकिन ख़बरदार मेरे जीवन-काल में यह भेद किसीसे न कहना।"

झोंपड़ी के बाहर मनुष्यों का एक समूह झाँक रहा था वह यह हाल जान गया। साधु ने दिल में कहा-ऐ परमात्मा! तेरी माया तू ही जाने। मैं इस चमत्कार को छिपाता हूँ और तू प्रगट करता है।

साधु ने आकाश-वाणी सुनी कि अभी थोड़े ही दिन में लोग तुझपर अविश्वास करने लगते, और तुझे कपटी, और प्रपंची बताने लगते और कहते कि इसीलिए ईश्वर ने इसकी यह दशा की है। वह लोग काफ़िर न हो जायें और अविश्वास और भ्रम में

ग्रस्त न हो जायें इसलिए हमने तेरा यह चमत्कार प्रगट कर दिया कि आवश्यकता के समय हम तुझे हाथ प्रदान कर देते हैं। यह जन्म के अविश्वासी ईश्वर से विमुख न हो जायें। मैं तो इन करामातों से पहले भी तुझे अपनी सत्ता का अनुभव करा चुका हूँ। यह चमत्कार प्रगट करने की शक्ति जो तुझको प्रदान की गयी है वह अन्य लोगों में विश्वास पैदा करने के लिए है। इसीलिए इसे प्रकाश में लाया गया है।

: ५ :

अच्छे-बुरे की परीक्षा

एक बादशाह ने दो गुलाम सस्ते दाम में ख़रीदे। एक से बात-चीत की तो वह गुलाम बड़ा बुद्धिमान और मिठबोला मालूम हुआ और जब ओठ ही मिठास के बने हुए हों तो उनमें शरबत को छोड़ और क्या निकलेगा? मनुष्य की मनुष्यता उसकी वाणी में भरी हुई है। जब इस गुलाम की परीक्षा कर चुका तो दूसरे को पास बुलाकर बादशाह ने देखा कि इसके दाँत काले काले हैं और मुँह गन्दा है। यद्यपि बादशाह इसके चेहरे को देख कर खुश नहीं हुआ था परन्तु उसकी योग्यता और गुणों की जाँच करने लगा। पहले गुलाम को तो उसने काम में लगा दिया कि जा और नहा धोकर आ और दूसरे से कहा—"तू अपना हाल सुना। तू अकेला ही सौ गुलामों के बराबर है। तू ऐसा मालूम नहीं होता जैसा तेरे साथी ने कहा था और हमें तेरी तरफ़ से बिल्कुल निराश कर दिया था।"

गुलाम ने जवाब दिया—"यह बड़ा सच्चा आदमी है। इससे ज्यादा भला आदमी मैंने कोई नहीं देखा। यह स्वभाव से ही

सत्यवादी है। इसलिए इसने जो मेरे सम्बंध में कहा है यदि ऐसा ही मैं इसके बारे में कहूँ तो झूठा दोष लगाना होगा। मैं इस भले आदमी की बुराई नहीं करूँगा। इससे तो यही अच्छा है कि अपने को दोषी मानलूं। बादशाह सलामत! सम्भव है कि वह मुझमें जो ऐब देखता है वह मुझे खुद न दीखते हों।" तब बादशाह ने कहा—"तू भी इसके अवगुणों का बखान कर, जैसा कि इसने तेरे दोषों का किया है, जिससे मुझे इस बात का विश्वास हो जाये कि तू मेरा हितैषी है और शासन-प्रबंध में मेरी सहायता कर सकता है।"

गुलाम बोला—"बादशाह सलामत! इस दूसरे गुलाम में नम्रता और सचाई है। वीरता और उदारता भी ऐसी है कि मौका पड़ने पर प्राण तक न्योछावर कर सकता है। चौथा दोष यह है कि वह अभिमानी नहीं और स्वयं ही अपने अवगुण प्रकट कर देता है। दोषों को प्रकट करना और ऐब ढूंढना यद्यपि बुरा है तो भी वह अन्य लोगों के लिए अच्छा है और अपने लिए बुरा है।"

बादशाह ने कहा—"अपने साथी की प्रशंसा में अत्युक्ति न कर और दूसरे की प्रशंसा के सहारे अपनी प्रशंसा न कर, क्योंकि यदि परीक्षा के लिए इसे मैं तेरे सामने बुलाऊँ तो तुझको लज्जित होना पड़ेगा।" गुलाम ने कहा—"नहीं मेरे साथी के सद्गुण इससे भी सौ गुने हैं। जो कुछ मैं अपने मित्र के सम्बंध में जानता हूँ यदि आपको उसपर विश्वास नहीं तो मैं और क्या निवेदन करूँ।"

इस तरह बहुत सी बातें करके बादशाह ने उस कुरूप गुलाम की अच्छी तरह परीक्षा कर ली और जब पहला गुलाम स्नानागार से बाहर आया तो उसको अपने पास बुलाया। बद सूरत गुलाम को वहाँ से बिदा कर दिया। और उस सुन्दर गुलाम के रूप और गुणों की प्रशंसा करके कहा—"मालूम नहीं तेरे साथी को क्या होगया था कि इसने पीठ पीछे तेरी बुराई की।"

इस गुलाम ने भौं चढ़ाकर कहा "ऐ दयासागर! इस नीच ने मेरे बारे में जो कुछ कहा उसका ज़रा सा संकेत तो मुझे मिलना चाहिए।" बादशाह ने कहा—"सबसे पहिले तेरे दोगलेपन का जिक्र किया कि तू प्रगट में दवा और अन्तर में दर्द है।" जब इसने बादशाह के मुँह से ये शब्द सुने तो इसका क्रोध भड़क उठा, चेहरा तमतमाने लगा और अपने साथी के सम्बंध में जो कुछ मुँह में आया बकने लगा। जब बुराइयाँ करता ही चला गया तो बादशाह ने इसके होठों पर हाथ धर दिया कि बस हद हो गयी। तेरी आत्मा गन्दी है और उसका मुँह गन्दा है। अतएव ऐ गन्दी आत्मावाले! तू दूर बैठ। वह गुलाम अधिकारी बने और तू उसके आधीन रह।

याद रक्खो सुन्दर और लुभावना रूप होते हुए भी यदि मनुष्य में अवगुण हैं तो उसका मान नहीं हो सकता। और यदि रूप बुरा पर चरित्र अच्छा है तो उस मनुष्य के चरणों में बैठकर प्राण विसर्जन कर देना भी श्रेष्ठ है।

: ६ :

फूट

एक माली ने देखा कि उसके बाग़ में तीन आदमी चोरों की तरह बिना पूछे घुस आये हैं। उनमें से एक सैयद है, एक सूफ़ी है और एक मौलवी है, और एक से बढ़कर एक उद्दंड और गुस्ताख़ है। उसने अपने मन में कहा कि ऐसे धूर्तों को दंड देना ही चाहिए परन्तु उनमें परस्पर बड़ा मेल है और एका ही सबसे बड़ी शक्ति है। मैं अकेला इन तीनों को नहीं जीत सकता। इसलिए बुद्धिमानी इसीमें है कि पहले इनको एक दूसरे से अलग कर-दूँ। यह सोचकर उसने पहले सूफ़ी से कहा—"हज़रत, आप मेरे घर जाइए और इन साथियों के लिए कम्बल ले आइए।" जब सूफ़ी कुछ दूर चला गया, तो कहने लगा—"क्यों श्रीमान! आप तो धर्म-शास्त्र के विद्वान हैं। और ये सैयद हैं। हम तुम-जैसे सज्जनों के प्रताप से ही रोटी खाते हैं और तुम्हारी समझ के परों पर उड़ते हैं। दूसरे पुरुष हमारे बादशाह हैं क्योंकि सैय्यद हैं और हमारे रसूल के वंश के हैं। लेकिन इस पेटू सूफ़ी में कौनसा गुण है जो तुम-जैसे बादशाहों के संग

रहे। यदि वह वापस आये तो उसे रूई की तरह धुन डालूँ। तुम लोग एक सप्ताह तक मेरे बाग़ में निवास करो। बाग ही क्या मेरी जान भी तुम्हारे लिए हाज़िर है, बल्कि तुम तो मेरी दाहिनी आँख हो।"

ऐसी चिकनी-चुपड़ी बातों से इनको रिझाया और खुद डंडा लेकर सूफ़ी के पीछे चला और उसे पकड़कर कहा—क्यों रे कुत्ते सूफ़ी, तू निर्लज्जता से बिना आज्ञा लिये लोगों के बाग में घुस आता है! यह तरीक़ा तुझको किसने सिखाया है। बता किस शेख़ और किस पीर ने आज्ञा दी? यह कहकर सूफ़ी को मारते-मारते अधमरा कर दिया। सूफ़ी ने जी में कहा—"जो कुछ मेरे साथ होनी थी वह तो हो चुकी; परन्तु मेरे साथियो! ज़रा अपनी ख़बर लो। तुमने मुझको पराया समझा। यद्यपि मैं इस दुष्ट माली से अधिक पराया न था। जो कुछ मैंने खाया है वही तुम्हें भी खाना है और सच बात तो यह है कि धूर्तों को ऐसा दण्ड मिलना ही चाहिए।"

जब माली ने सूफ़ी को ठीक कर दिया तो वैसा ही एक बहाना और ढूँढा और कहा—"ऐ मेरे प्यारे सैयद! आप मेरे घर पर तशरीफ़ ले जायें। मैंने आपके लिए बढ़िया खाना बनवाया है। मेरे दरवाज़े पर जाकर दासी को आवाज़ देना। वह आपके लिए पूरियाँ और तरकारियाँ ला देगी। जब उसको विदा कर चुका तो मौलवी से कहने लगा—"ऐ महापुरुष! यह तो प्रगट है और मुझे भी विश्वास है कि तू धर्म-शास्त्रों का ज्ञाता

है ; परन्तु तेरे साथी का सैयदपने का दावा निराधार है। तुझे क्या मालूम इसकी माँ ने क्या-क्या किया ?" इस प्रकार सैयद को जाने क्या-क्या बुरा-भला कहा। मौलवी चुपचाप सुनता रहा, तब उस दुष्ट ने सैयद का भी पीछा किया और रास्ते में रोककर कहा—अरे गधे ! इस बाग में तुझे किसने बुलाया ? यदि तू नबी की सन्तान होता तो यह कुकर्म न करता। फिर उसने सैयद को पीटना शुरू किया और जब वह इस ज़ालिम की मार से बेहाल हो गया तो आँखों में आँसू भरकर मौलवी से बोला—मियाँ अब तुम्हारी बारी है। अकेले रह गये हो। तुम्हारी तोंद पर वह चोट पड़ेगी कि नक़्क़ारा बन जायेगी। यदि मैं सैयद नहीं हूँ और तेरे साथ रहने योग्य नहीं हूँ तो ऐसे ज़ालिम से तो बुरा नहीं हूँ।

इधर जब वह माली सैयद से भी निबट चुका तो मौलवी की ओर मुड़ा और कहा—"ऐ मौलवी ! तू सारे धूर्तों का सरदार है। खुदा तुझे लुंजा करे। क्या तेरा यह फ़तवा है कि किसी के बाग़ में बेधड़क घुस आये और आज्ञा भी न ले ? अरे मूर्ख, ऐसा करने की तुझे किसने आज्ञा दी है ? या किसी धार्मिक ग्रन्थ में तूने ऐसा पढ़ा है ?" इतना कहकर वह उसपर टूट पड़ा और इतना मारा कि कचूमर निकाल दिया।

मौलवी ने कहा—तुझे निस्सन्देह मारने का अधिकार है। कोई कसर उठा न रख। जो अपनों से अलग हो जाये उसकी यही सज़ा है। इतना ही नहीं बल्कि इससे भी सौगुना दण्ड मिलना

चाहिए। मैं अपने व्यक्तिगत बचाव के लिए अपने साथियों से क्यों अलग हुआ ?

जो अपने साथियों से अलग होकर अकेला रह जाता है उसे ऐसी ही मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। फूट बुरी बला है।

: ७ :

लाहौल वला कूवत

एक सूफ़ी यात्रा करते हुए रात हो जाने पर किसी मठ में ठहरा। अपना खच्चर तो उसने अस्तबल में बाँध दिया और आप मठ के भीतर एक मुख्य स्थान में जा बैठा। मठ के लोग मेहमान के लिए भोजन लाये तो सूफ़ी को अपने खच्चर की याद आयी उसने मठ के नौकर को आज्ञा दी कि अस्तबल में जा और खच्चर को घास और जौ खिला।

नौकर ने निवेदन किया—"आपके फ़रमाने की ज़रूरत नहीं। मैं सदैव यही काम किया करता हूँ।"

सूफ़ी बोला—"जौ पानी में भिगो कर देना, क्योंकि खच्चर बूढ़ा हो गया है और उसके दाँत कमज़ोर हैं।"

"हज़रत, आप मुझे क्या सिखाते हैं! लोग तो ऐसी-ऐसी युक्तियाँ मुझसे सीख कर जाते हैं।"

"पहले इसका तैरू उतारना। फिर इसकी पीठ के घाव पर मरहम लगा देना।"

"खुदा के लिए अपनी तदबीर किसी और मौक़े के

लिए न रख लीजिए। मैं ऐसे सब काम जानता हूँ। सारे मेहमान हमसे खुश होकर जाते हैं; क्योंकि हम अपने अतिथियों को जान के बराबर प्यारा समझते हैं।"

और देख—"इसको पानी भी पिलाना; परन्तु थोड़ा गर्म करके देना।"

"आपकी इन छोटी-छोटी बातों के समझाने से मुझे शर्म आती है।"

"जौ में ज़रा-सी घास भी मिला देना।"

"आप धैर्य से बैठे रहिए सब कुछ हो जायेगा।"

"उस स्थान का कूड़ा-करकट साफ़ कर देना और यदि वहाँ सील हो तो सूखी घास बिछा देना।"

"ऐ बजुर्ग! एक योग्य सेवक से ऐसी बातें करने से क्या लाभ?"

"मियाँ, ज़रा खुरेरा भी फेर देना। और ठंड का मौसम है खच्चर की पीठ पर झूल भी डाल देना।"

"हज़रत, आप चिन्ता न कीजिए। मेरा काम दूध की तरह स्वच्छ और बेलाग होता है। मैं अपने काम में आपसे ज्यादा होशियार हो गया हूँ। भले-बुरे मेहमानों से वास्ता पड़ा है। जिसे जैसा देखता हूँ, वैसी ही उसकी सेवा करता हूँ।"

नौकर ने इतना कहकर कमर कसी और चला गया। खच्चर का इन्तज़ाम तो उसे क्या करना था। अपने गुण्डे मित्रों में बैठकर सूफ़ी की हँसी उड़ाने लगा। सूफ़ी रास्ते का हारा

थका तो था ही, लेट गया और अर्द्धनिद्रा की अवस्था में सपना देखने लगा।

उसने सपने में देखा उसके खच्चर को एक भेड़िये ने मार दिया है और उसकी पीठ और जाँघ के मांस के लोथड़े को नोच-नोचकर खा रहा है। आँखें खुल गयीं और अपने जी में कहने लगा—यह कैसा पागलपन का सपना है। भला वह दयालु सेवक खच्चर को छोड़कर कहाँ जा सकता है। फिर सपने में देखा कि वह खच्चर रास्ते में चलते समय कभी कुँए में गिर पड़ता है, कभी गड्ढे में। ऐसी भयानक दुर्घटना सपने में देखकर वह बार-बार चौंक पड़ता और आँख खुलने पर कुरानशरीफ़ की आयतें पढ़ लेता।

अन्त में व्याकुल होकर कहने लगा—"अब हो ही क्या सकता है। मठ के सब लोग पड़े सोते हैं। और नौकर दरवाज़े बन्द करके चले गये।" सूफ़ी तो इस भ्रम में पड़ा हुआ था और खच्चर पर वह मुसीबत आयी कि ईश्वर दुश्मन पर भी न डाले। इस बेचारे का तैरू वहाँ की धूल और पत्थरों में घिसटकर टेढ़ा हो गया और बागडोर टूट गयी। दिन भर का हारा-थका भूखा-प्यासा मरणासन्न अवस्था में पड़ा रहा। बार-बार अपने मन में कहता रहा कि ऐ धर्म नेताओ! दया करो। मैं ऐसे कच्चे और विचारहीन सूफ़ियों से बाज़ आया।

इस प्रकार इस खच्चर ने रात भर जो कष्ट और जो यातनाएँ झेलीं वे ऐसी थीं जैसे धरती के पक्षी को पानी में

गिरने से झेलनी पड़ती हैं। वह एक ही करवट सुबह तक भूखा पड़ा रहा। घास और जौ की बाट में हिनहिनाते-हिनहिनाते सबेरा हो गया। जब अच्छी तरह उजाला होगया, तो नौकर आया और तुरन्त तैरू को ठीक करके उसकी पीठ पर रखा और निर्दयी ने गधे बेचनेवालों की तरह दो-तीन आर लगायीं। ख़च्चर कील के चुभने से तरारे भरने लगा। उस ग़रीब के जीभ कहाँ थी जो अपना हाल सुनाता। लेकिन जब सूफ़ी सवार होकर आगे बढ़ा तो ख़च्चर निर्बलता के कारण गिरने लगा। जहाँ कहीं गिरता था लोग उसे उठा देते थे और समझते थे ख़च्चर बीमार है। कोई ख़च्चर के कान मरोड़ता, कोई मुँह खोलकर देखता, कोई यह जाँच करता कि खुर और नाल के बीच में कंकर तो नहीं आगया है और लोग कहते कि ऐ शेख़! तुम्हारा खच्चर बार-बार गिरा पड़ता है इसका क्या कारण है? शेख़ जवाब देता खुदा का शुक्र है! ख़च्चर तो मज़बूत है। मगर वह ख़च्चर जिसने रात भर लाहौल (दूर हो शैतान) खाई हो (अर्थात् चारा न मिलने के कारण रातभर दूर हो शैतान की रट लगाता रहा) सिवाय इस ढंग के रास्ता तै नहीं कर सकता और इसकी यह हरकत मुनासिब मालूम होती है क्योंकि जब इसका चारा लाहौल था तो रात भर इसने तसबीह (माला) फेरी। अब दिन भर सिज्दे करेगा (अर्थात् गिर-गिर पड़ेगा)।

जब किसी को तुम्हारे काम से हमदर्दी नहीं है तो अपना काम स्वयं ही करना चाहिए। बहुत से लोग मनुष्य भक्षक हैं। तुम उनके अभिवादन करने से (अर्थात् उनकी नम्रता के भ्रम में पड़कर) लाभ की आशा न रक्खो। जो मनुष्य शैतान के धोखे में फँसकर लाहौल खाता है। वह खच्चर की तरह मार्ग में सिर के बल गिरता है।

शेर की तरह अपना शिकार आप करना चाहिए। किसी के धोखे में न आना चाहिए। कुपात्रों की सेवा ऐसी होती है जैसी इस सेवक ने की। ऐसे अनधिकारी लोगों के धोखे में आने से बिना नौकर के रहना ही अच्छा है।

: ८ :

बुद्धिमान या पागल ?

एक आदमी यह कह रहा था कि मुझे ऐसा बुद्धिमान मनुष्य चाहिये जिससे कठिन समय में मशवरा लिया करूँ। किसीने कहा हमारे शहर में तो सिवाय इस पागलों जैसी सूरतवाले के और कोई बुद्धिमान मनुष्य नहीं। देख वह मनुष्य सरकन्डे पर सवार बच्चों में दौड़ता फिरता है। प्रगट में तो दिन-रात बच्चों में गेंद खेलता है। परन्तु अन्तर में गुप्त ख़ज़ाना है।

प्रार्थी ने भी बहाना बनाया और बहलोल से कहा--"ऐ सवार! एक क्षण के लिये घोड़े का रुख इधर फेर दीजिए। बहलोल ने तुरन्त इसकी तरफ़ सरकंडा बढ़ाकर कहा कि हाँ जल्दी कहो क्योंकि मेरा घोड़ा बहुत मुँहज़ोर और तेज़ है। जल्दी करो कहीं तुम्हें लात न मार दे। जो कुछ तुम्हें पूछना है जल्दी पूछो ?

जब इसने अपने दिल का भेद कहने का कोई मौक़ा न देखा तो दिल्लगी शुरू कर दी कि बहलोल का भेद मालूम करे। कहने लगा कि मैं निकाह के लिए एक औरत की तलाश में हूँ। मुझ जैसे आदमी के लिए कैसी औरत ठीक होगी।

बहलोल ने कहा—"संसार में तीन तरह की स्त्रियाँ हैं। इनमें दो खोटी और एक प्रचलित सिक्के के समान है। अतः यदि इससे निकाह किया तो पूरी की पूरी तुम्हारी पत्नी रहेगी और जो दूसरी है सो वह आधी तुम्हारी और आधी तुमसे अलग और तीसरी याद रखो कि बिलकुल तुम्हारी नहीं। बस जाओ कहीं मेरा घोड़ा ऐसी लात न मार दे कि तुम गिर पड़ो और फिर क़यामत तक न उठ सको।"

शेख सरकंडे का घोड़ा दौड़ाते चले गये। परन्तु इस आदमी ने फिर आवाज़ दी कि ऐ हज़रत आप कहाँ चले? यहाँ तो आओ, तुमने तीन तरह की औरतें बतायी हैं तो इनके चिह्न और पहचान भी तो बताओ। आपने फिर घोड़ा रोका और फ़रमाया कि यदि कुआँरी से विवाह करोगे तो वह तुम्हारी होगी और तुम बेफ़िक्र रहोगे और जिसको मैंने आधी पत्नी बताया वह विधवा स्त्री होती है। जिसे मैं पत्नी मानता ही नहीं वह बाल-बच्चोंवाली विधवा है। ऐसी स्त्री के चूँकि पहले पति से बच्चे होते हैं इसलिए उसका प्रेम और ध्यान अपनी संतान पर होता है। बस चलो कहीं मेरा घोड़ा लात न मार दे। शेख ने हाहा हूहू के नारे लगाये और अपना घोड़ा मोड़कर बच्चों को पास बुलाने लगे।

इस प्रार्थी ने फिर चिल्लाकर कहा कि ऐ मियाँ! एक सवाल और रह गया है, ज़रा वह भी बताते जाओ। आपने फिर घोड़ा घुमाकर पूछा कि वह क्या है? जल्द कहो। देखो वह बच्चा मेरी गेंद उड़ाकर ले गया।

इसने कहा—"ऐ बादशाह! इतनी बुद्धि और ज्ञान के बावजूद भी यह क्या पाखंड बना रक्खा है? तुमतो पूर्ण बुद्धिमानो में सर्वोपरि और समझ की बातें करने में अद्वितीय हो। यह पागल का रूप क्यों बना रक्खा है?" आपने उत्तर दिया कि सांसारिक मनुष्यों ने यह निश्चित किया था कि मुझे इस शहर का क़ाज़ी (न्यायाधीश) बनायें। मैंने माफी चाही तो ज़िद करने लगे और कहा तुम जैसे विद्वान के होते हुए किसी दूसरे अयोग्य मनुष्य को मृत्यु दण्ड का अधिकार देना हराम है। धर्म-शास्त्र ने यह आज्ञा नहीं दी कि हम तुम जैसे योग्य व्यक्ति के होते हुए किसी दूसरे को अपना न्यायाधीश और नेता मान लें। इस मजबूरी से मैं दीवाना बनकर इधर-उधर फिरने लगा। और अपनी असमर्थता प्रकट करके इन लोगों से पीछा छुड़ाया। यद्यपि प्रकट में मुझे दिमाग़ की ख़राबी मालूम होती है परन्तु अन्तर में वैसा ही हूँ जैसा कि पहले था। मेरी अक़्ल खज़ाना है और मैं वीराना हूँ। यदि मैं अपना खज़ाना सर्वसाधारण पर प्रकट कर दूँ तो यह पागलपन होगा। अतः अब मैं शक्कर की खान या गन्ने का खेत हूँ। मुझसे मिठास उत्पन्न होती है, और मैं ही खाता हूँ।

कभी ऐसा समय भी आता है कि बुद्धिमानों मनुष्यों को अपनी बुद्धिमानी छिपाने ही में कल्याण मालूम होता है।

: ६ :

खारे पानी का उपहार

पुराने ज़माने में एक ख़लीफ़ा था, जो हातिम से भी बढ़कर उदार और दानी था। उसने अपनी दानशीलता तथा परोपकार के कारण निर्धनता और याचना का अंत कर दिया था। पूरब से पच्छिम तक इसकी दानशीलता की चर्चा फैल गयी।

एक दिन एक अरब की स्त्री ने अपने पति से कहा—"ग़रीबी के कारण हम हर तरह के कष्ट सहन कर रहे हैं। सारा संसार सुखी है लेकिन हमीं दुखी हैं। खाने के लिए रोटी तक मयस्सर नहीं। आजकल हमारा भोजन ग़म है या आँसू। दिन की धूप हमारे वस्त्र हैं, रात सोने को बिस्तर है, और चाँदनी लिहाफ़ है, चन्द्रमा के गोल चक्कर को चपाती समझकर हमारा हाथ आसमान की तरफ़ उठ जाता है। हमारी भूख और कङ्गाली से फ़क़ीरों को भी शर्म आती है और अपने पराये सभी दूर भागते हैं।"

पति ने जवाब दिया—"कबतक ये शिकायतें किये जायेगी। हमारी उम्र ही क्या ऐसी ज़्यादा रह गयी है? बहुत बड़ा हिस्सा बीत चुका है। बुद्धिमान आदमी की निगाह में अमीरी और

ग़रीबी में कोई फर्क नहीं है। ये दोनों दशाएँ तो पानी की लह हैं। आयीं और चली गयीं। नदी की तरंग हल्की हों या तेज़ जब किसी समय भी इनको स्थिरता नहीं। तो फिर इसका ज़िक्र ही क्या? जो आराम से जीवन बिताता है, वह बड़े दुखों से मरता है। तू तो मेरी स्त्री है। स्त्री को अपने पति के विचारों से सहमत होना चाहिए। जिससे एकता से सब काम ठीक चलते रहें। मैं तो सन्तोष किये बैठा हूँ। तू ईर्षा के कारण क्यों जली जा रही है?"

पुरुष बड़ी हमदर्दी से इस तरह के उपदेश अपनी औरत को देता रहा। स्त्री ने झुँझलाकर डाँटा—"निर्लज्ज! मैं अब तेरी बातों में न आऊँगी। ख़ाली नसीहत की बातें न कर। तूने कब से सन्तोष करना सीखा है? तूने तो केवल सन्तोष का नाम ही नाम सुना है। जिससे जब मैं रोटी कपड़े की शिकायत करूँ तो तू अशिष्टता और गुस्ताख़ी का नाम लेकर मेरा मुँह बन्द कर सके। तेरी नसीहत ने मुझे निरुत्तर नहीं किया। हाँ ईश्वर की दुहाई सुनने से मैं चुप हो गयी। लेकिन अफ़सोस है तुझपर कि तूने ईश्वर के नाम को चिड़ीमार का फंदा बना लिया। मैंने तो अपना मन ईश्वर को सौंप दिया है। ताकि मेरे घावों की जलन से तेरा शरीर अछूता न बचे या तुझको भी मेरी तरह बन्दी (स्त्री) बनादे।" स्त्री ने अपने पति पर इसी तरह के अनेक ताने कसे। मर्द औरत के ताने चुपचाप सुनता रहा।

मर्द ने कहा—"तू मेरी स्त्री है या बिजका? लड़ाई-झगड़े

ग़ौर दुर्वचनों को छोड़। इन्हें नहीं छोड़ती तो मुझे ही छोड़। रे कच्चे फोड़ों पर डंक न मार। अगर तू जीभ बन्द करे तो ख़ैर। नहीं तो याद रख मैं अभी घर-बार छोड़ दूँगा। तंग जूता पहनने से नंगे पैर फिरना अच्छा है। हर समय के घरेलू झगड़ों से यात्रा के कष्ट सहना श्रेष्ठ है।"

स्त्री ने जब देखा कि उसका पति नाराज हो गया है तो झट रोने लगी। सब जानते हैं कि रोना स्त्री का ज़बरदस्त जाल है। फिर गिड़गिड़ाकर कहने लगी—"मैं केवल पत्नी ही नहीं, बल्कि पाँव की धूल हूँ। मैं तुम्हें ऐसा न समझे थी। बल्कि मुझे तो तुमसे और ही आशा थी। मेरे शरीर के तुम्हीं मालिक हो। और तुम्हीं मेरे शासक हो। यदि मैंने धैर्य और सन्तोष को छोड़ा तो यह अपने लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए। तुम मेरी सब मुसीबतों और बीमारियों की दवा करते हो इसलिए मैं तुम्हारी दुर्दशा को नहीं देख सकती। तुम्हारे शरीर की सौगन्ध, यह शिकायत अपने लिए नहीं बल्कि यह सब रोना-धोना तुम्हारे लिए है। तुम जो मुझे छोड़ने का ज़िक्र करते हो। यह ठीक नहीं है।"

इस तरह की बातें कहती रही और फिर रोते-रोते औंधे मुँह गिर पड़ी। इस वर्षा से एक बिजली चमकी और मर्द के दिल पर इसकी एक चिनगारी झड़ी। वह अपने शब्दों पर पछतावा करने लगा। जैसे मरते समय कोतवाल अपने पिछले अत्याचारों और पापों को याद कर रोता है। जी में कहने लगा जब मैं इसका स्वामी हूँ तो मैंने इसको कष्ट क्यों दिया? फिर उससे बोला

"मैं अपनी इन बातों के लिए लज्जित हूँ। मैं तेरा अपराधी मुझे क्षमा कर। अब मैं तेरा विरोध नहीं करूँगा। जो कुछ तू कहेगी उसीके अनुसार काम करूँगा।"

औरत ने कहा—"तुम यह प्रतिज्ञा सच्चे दिल से कर रहे हो या चालाकी से मेरे दिल का भेद ले रहे हो ?" वह बोला—"उस ईश्वर की सौगन्ध जो सबके दिलों का भेद जाननेवाला है जिसने आदम के समान पवित्र नबी को पैदा किया। यदि मेरे यह शब्द केवल तेरा भेद लेने के लिए हैं तो तू इनको भी एक बार परीक्षा करके देख ले।"

औरत ने कहा—"देखो सूरज चमक रहा है और संसार इससे जगमगा रहा है। खुदा के खलीफ़ा का नायब जिसके प्रताप से शहर बग़दाद इंद्रपुरी बना हुआ है, यदि तू उस बादशाह से मिले तो खुद भी बादशाह हो जायेगा, क्योंकि भाग्यवानों की मित्रता पारस के समान है। बल्कि पारस भी इसके सामने छोटा है। हज़रत रसूल की निगाह अबूबकर पर पड़ी तो वह उनकी ज़रा सी कृपा से इस महान पद को पहुँच गये।"

मर्द ने कहा--"भला बादशाह तक मेरी पहुँच कैसे हो सकती है ? बिना किसी ज़रिये के वहाँतक कैसे पहुँच सकता हूँ ?' औरत ने कहा "हमारी मशक में बरसाती पानी भरा रक्खा है। तुम्हारे पास यही सम्पत्ति है। इस पानी की मशक को उठाकर ले जाओ और इसी उपहार के साथ बादशाह की सेवा में उपस्थित हो जाओ और प्रार्थना करो कि हमारी जमा पूँजी इसके सिवा कुछ है नहीं।

मरुभूमि में इससे उत्तम जल प्राप्त होना असम्भव है। चाहे उसके खज़ाने में मोती और हीरे भरे हुए हैं, लेकिन ऐसे श्रेष्ठ जल का वहाँ मिलना भी दुश्वार है।" मर्द ने कहा—"अच्छी बात है। मशक का मुँह बन्द कर, देखें तो यह सौगात हमें क्या फ़ायदा पहुँचाती है? तू इसे नमदे में सीदे जिससे सुरक्षित रहे। और बादशाह हमारी इस भेंट से रोज़ा खोले। ऐसा पानी संसार भर में कहीं नहीं। पानी क्या यह तो निथरी हुई शराब है।"

उसने पानी की मशक उठायी और चल दिया। सफ़र में दिन को रात और रात को दिन कर दिया। उसको यात्रा के कष्टों के समय भी मशक की हिफ़ाज़त का ही ख़याल रहता था।

इधर औरत ने खुदा से दुआ माँगनी शुरू की कि ऐ परवरदिगार! रक्षा कर, ऐ खुदा! हिफ़ाज़त कर।

स्त्री की प्रार्थना तथा अपने परिश्रम और प्रयत्न से वह अरब हर विपत्ति से बचता हुआ राज़ी खुशी राजधानी तक पानी की मशक को ले पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि बड़ा सुन्दर महल बना हुआ है और सामने याचकों का जमघट लगा हुआ है। हर तरफ़ के दरवाज़ों से लोग अपनी प्रार्थना लेकर जाते हैं और सफल मनोरथ होकर लौटते हैं।

जब यह अरब महल के द्वार तक पहुँचा तो चोबदार आये। उन्होंने इसके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। चोबदारों ने पूछा—ऐ भद्र पुरुष! तू कहाँ से आ रहा है? कष्ट और विपत्तियों के कारण तेरी क्या दशा हो गयी है? इसने कहा—"यदि

तुम मेरा सत्कार करो तो मैं भद्र पुरुष हूँ और यदि मुँह फेर लो तो बिल्कुल छोटा हूँ। ऐ अमीरो! तुम्हारे चेहरों पर ऐश्वर्य टपक रहा है। तुम्हारे चेहरों का रंग शुद्ध सोने से भी अधिक उजला है। मैं मुसाफिर हूँ। रेगिस्तान से बादशाह की सेवा में भिखारी बनकर हाजिर हुआ हूँ। उसके गुणों की सुगन्धि मरुभूमि तक पहुँच चुकी है। रेत के निर्जीव कणों तक में जान आ गयी है। यहाँ तक तो मैं अशर्फियों के लोभ से आया था। परन्तु जब यहाँ पहुँचा तो इसके दर्शनों के लिए उत्कण्ठित हो गया। फिर पानी की मशक देकर कहा—"इस नज़राने को सुलतान की सेवा में पहुँचाओ और निवेदन करो कि मेरी यह तुच्छ भेंट किसी स्वार्थ के लिए नहीं है। यह भी अर्ज़ करना कि यह मीठा पानी सौंधी मिट्टी के घड़े का है जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा किया गया था।" चोबदारों को पानी की प्रशंसा सुनकर हँसी आने लगी। लेकिन उन्होंने प्राणों की तरह मशक को उठा लिया, क्योंकि बुद्धिमान बादशाह के सद्गुण सभी राज-कर्मचारियों में आ गये थे।

जब खलीफ़ा ने देखा और इसका हाल सुना तो मशक को अशर्फ़ियों से भर दिया। इतने बहुमूल्य उपहार दिये कि वह अरब भूख-प्यास भूल गया। फिर एक चोबदार को इस दयालु बादशाह ने संकेत किया—"यह अशर्फी भरी मशक इस अरब के हाथ में देदी जाये और लौटते समय इसे दजला नदी के रास्ते से रवाना किया जाये। वह बड़े लम्बे रास्ते से यहाँ तक पहुँचा है।

ौर दजला का मार्ग उसके निवास स्थान से बहुत निकट हो जाता है। ाव में बैठेगा तो सारी पिछली थकान भूल जायेगा।" चोबदारों ने ऐसा ही किया। उसको अशर्फ़ियों से भरी हुई मशक दे दी और दजला पर ले पहुँचे। जब वह अरब नौका में सवार हुआ और दजला नदी को देखा तो लज्जा के कारण उसका सिर झुक गया फिर नतमस्तक हो कहने लगा कि दाता की देन भी निराली है और इससे भी बढ़कर ताज्जुब की बात यह है कि उसने मेरे कड़वे पानी तक को क़बूल कर लिया।

: १० :

स्वच्छ हृदय

चीनियों को अपनी चित्रकला पर घमंड था और रूमियों को अपने हुनर पर गर्व था। सुलतान ने आज्ञा दी कि मैं तुम दोनों की परीक्षा करूँगा। चीनियों ने कहा कि बहुत अच्छा हम अपना हुनर दिखायेंगे। रूमियों ने कहा हम अपना कमाल दिखायेंगे। मतलब यह है कि चीनी और रूमियों में अपनी-अपनी कला दिखाने के लिए मुक़ाबला ठहर गया।

चीनियों ने रूमियों से कहा अच्छा एक कमरा हम ले लें और एक तुम ले लो। दो कमरे आमने सामने थे। इनमें एक चीनियों को मिला और दूसरा रूमियों को। चीनियों ने सैंकड़ों तरह के रंग माँगे। बादशाह ने खज़ाने का दरवाज़ा खोल दिया। चीनियों को मुँह माँगे रंग-मिलने लगे। रूमियों ने कहा—"हम न तो कोई चित्र बनायेंगे और न रंग लगायेंगे। बल्कि अपना हुनर इस तरह दिखायेंगे कि पिछला रंग भी बाकी न रहे।"

अतएव उन्होंने दरवाज़े बन्द करके दीवारों को माँजना शुरू किया और आकाश की तरह बिल्कुल साफ़ और सादा घोटाकर

डाला। उधर चीनी अपना काम समाप्त करके खुशी के कारण उछलने लगे।

बादशाह ने आकर चीनियों का काम देखा, और उनकी अद्भुत चित्रकारी को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। इसके पश्चात् वह रूमियों की तरफ़ आया। उन्होंने अपने काम पर से पर्दा उठाया। चीनियों के चित्रों का प्रतिबिम्ब इन घुटी हुई दीवारों पर पड़ा। दीवार इतनी सुन्दर मालूम हुईं कि देखनेवालों की आँखें चौंधियाने लगीं।

रूमियों की उपमा उन ईश्वर-भक्त सूफ़ियों की सी है जिन्होंने न तो धार्मिक पुस्तकें पढ़ी हैं। और न किसी अन्य विद्या या कला में योग्यता प्राप्त की है। लेकिन लोभ, ईर्षा, द्वेष, इत्यादि दुर्गुणों को दूर करके अपने हृदय को माँज कर, इस तरह साफ़ कर लिया है कि इनके दिल स्वच्छ शीशे की तरह उज्ज्वल हो गये हैं। जिनमें निराकार ईश्वरीय ज्योति का प्रतिबिम्ब स्पष्ट झलकता है।

: ११ :

मूर्खों से भागो

हज़रत ईसा एक बार पहाड़ की तरफ़ इस तरह दौड़े जा रहे थे कि जैसे कोई शेर इनपर हमला करने के लिए पीछे से आ रहा हो। एक आदमी इनके पीछे दौड़ा और पूछा—"ख़ैर तो है ? हज़रत, आपके पीछे तो कोई भी नहीं, फिर पक्षी की तरह क्यों उड़े चले जा रहे हो ?" परन्तु ईसा ऐसी जल्दी में थे कि कोई जवाब नहीं दिया। कुछ दूर तक वह आदमी इनके पीछे-पीछे दौड़ा और आख़िर बड़े ज़ोर की आवाज़ देकर इनको पुकारा—"खुदा के वास्ते ज़रा तो ठहरिये। मुझे आपकी इस भाग-दौड़ से बड़ी परेशानी हो रही है। आप इधर से क्यों भागे जा रहे हैं ? आपके पीछे न शेर है न शत्रु!"

हज़रत ईसा बोले—"तेरा कहना सच है। परन्तु एक मूर्ख मनुष्य से भाग रहा हूँ।" उसने कहा क्या तुम मसीहा नहीं हो ? जिनके चमत्कार से अन्धे देखने लगते हैं और बहरों को सुनायी देने लगता है ?

बोले—हाँ।

उसने पूछा—"क्या तुम वह बादशाह नहीं कि जिसमें ऐसी शक्ति है कि यदि मुर्दे पर मन्त्र फूँक दे तो वह मुर्दा भी ज़िंदा पकड़े गए शेर की तरह उठ खड़ा होता है।"

ईसा ने कहा हाँ मैं वही हूँ। फिर इसने पूछा कि क्या आप वह नहीं कि मिट्टी को पक्षी बनाकर इसपर ज़रा मन्त्र पढ़ें तो जान पड़ जाये और उसी वक्त हवा में उड़ने लगे? ईसा ने जवाब दिया—निस्सन्देह।

फिर उसने निवेदन किया—"ऐ पवित्र आत्मा! आप जो चाहें कर सकते हैं। फिर आपको किसका भय है?"

हज़रत ईसा ने कहा—"ईश्वर की शपथ! जो शरीर और जीव का पैदा करनेवाला है? और जिसकी महान् शक्ति के मुक़ाबले में आकाश भी तुच्छ है। जब इसके पवित्र नाम को मैंने बहरों और अन्धों पर पढ़ा तो वह अच्छे हो गये। पहाड़ों पर चढ़ा तो उनके टुकड़े-टुकड़े हो गये। मृतशरीरों पर पढ़ा तो जीवित होगये। परन्तु मैंने बड़ी श्रद्धा से वही पवित्र नाम जब मूर्ख पर पढ़ा और लाखों बार पढ़ा तो अफ़सोस कोई लाभ नहीं हुआ।"

उस आदमी ने आश्चर्य से पूछा कि हज़रत यह क्या बात है कि ईश्वर का नाम वहाँ फ़ायदा करता है और यहाँ कोई असर नहीं करता। यद्यपि यह भी एक बीमारी है और वह भी। फिर क्या कारण है कि उस सृष्टि-कर्त्ता का पवित्र नाम दोनों पर समान असर नहीं करता।

हज़रत ईसा ने कहा—"मूर्खता का रोग ईश्वर की ओर से दिया

हुआ दंड है और अन्वेषण की बीमारी दंड नहीं, बल्कि परीक्षा है। परीक्षा के तौर पर जो बीमारी है उसपर दया आती है और मूर्खता वह रोग है कि इससे दिल में जलन होती है।

हज़रत ईसा की तरह मूर्खों से दूर भागना चाहिए। मूर्खों के संग ने बड़े-बड़े झगड़े पैदा किये हैं। जिस तरह कि हवा आहिस्ता-आहिस्ता पानी को खुश्क कर देती है। उसी तरह मूर्ख मनुष्य भी धीरे-धीरे प्रभाव डालता है और इसका अनुभव नहीं होता।

: १२ :

ईश्वर की खोज

इब्राहीम अधम रात में सिंहासन पर सो रहा था और सिपाही कोठे पर पहरा दे रहे थे। बादशाह का यह अभिप्राय नहीं था कि सिपाहियों की सहायता से चोरों और दुष्ट मनुष्यों से बचा रहे, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि जो बादशाह न्याय-प्रिय है उसपर कोई विपत्ति नहीं आ सकती। एक दिन उस श्रेष्ठ पुरुष ने सिंहासन पर सोते हुए किसीके कुछ शब्द और धमाधम होने की आवाज़ सुनी।

वह अपने दिल में विचारने लगा कि यह किसकी हिम्मत है जो महल के कोठे पर इस तरह धमाके से पैर रक्खे। उसने कोठे के झरोखों से डाटकर कहा—कौन है? अरे! यह तो मनुष्य नहीं शायद परी है?

कोठे पर से लोगों ने सिर झुकाकर कहा--"रात्रि में हम ढूँढ़ने निकले हैं।"

बादशाह ने पूछा—"क्या ढूँढने निकले हो?" लोगों ने उत्तर दिया—"ऊँटों को।"

बादशाह ने फिर सवाल किया—"क्या ऊँट उचककर कोठे प पहुँच गया ?"

उन लोगों ने बादशाह को उत्तर दिया—"यदि इस प्रतिष्ठित सिंहासन पर बैठकर ईश्वर से मिलने की इच्छा की जा सकती है तो कोठे पर ऊँट भी मिल सकता है।"

इस घटना के बाद बादशाह को किसीने नहीं देखा। जिनों और परियों की तरह वह लोगों की नज़र से ग़ायब हो गया। उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी सूरत लोगों के सामने थी। लोग दाढ़ी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं ?

: १३ :

चुड़ैल का जादू

एक राजा का नवयुवक पुत्र बड़ा सुन्दर था। राजा ने एक दिन स्वप्न में देखा कि लड़का मर गया है। इकलौता बेटा, फिर सुन्दर और होनहार। राजा खूब रोया और सिर धुनने लगा। इतने ही में निद्रा भंग हो गयी। जागा तो सब भ्रम था। लड़का बड़े आनन्द में था। पुत्र के जन्म पर जो खुशी हुई थी अब उसके मरकर जीने पर उससे भी अधिक प्रसन्नता हुई।

जब राज-ज्योतिषियों को यह हाल मालूम हुआ तो दौड़ आये और कहने लगे कि यह स्वप्न विवाह का सूचक है। अब बहुत जल्द राजकुमार का विवाह हो जाना चाहिए।

राजा एक साधु से परिचित थे। जो अपनी तपस्या और विद्या के कारण विख्यात था। साधु के एक बड़ी खूबसूरत लड़की थी। उसीसे राजा ने राजकुमार का विवाह करना निश्चय किया। और साधु के पास सन्देश भेजा। साधु बड़ा खुश हुआ और विवाह के लिए रज़ामन्द हो गया। राजा के लड़के और साधु की लड़की का विवाह हो गया।

जब रानी को यह हाल मालूम हुआ कि पुत्र-वधू एक साधारण साधु की लड़की है, तो उसे बड़ा क्रोध आया। राजा से बोली कि तुमने अपनी प्रतिष्ठा का कुछ भी खयाल न किया जो राजा होकर साधु से रिश्ता जोड़ लिया।

राजा ने रानी की बात सुनी तो कहने लगा—"तू उसको साधु न समझ। वह तो राजा है। जिसने अपनी इच्छाओं को वश में कर लिया वही राजा है। इन्द्रियों के दास को कौन बुद्धिमान मनुष्य राजा कह सकता है। बस, अब चिन्ता न कर, मैंने राजा से रिश्ता जोड़ा है साधु से नहीं।"

इधर तो यह हुआ और उधर कुछ और हो गया। राजकुमार को वह साधु की लड़की जो वास्तव में बड़ी रूपवती थी पसन्द न आयी। उसे एक दूसरी ही स्त्री पसन्द थी।

वह औरत बिलकुल चुड़ेल थी। हर एक उससे नफ़रत करता था। पर राजकुमार उसपर मुग्ध था। उसे इस चुड़ैल का इतना मोह हो गया था कि इसके लिए जान देने को भी तैयार था।

राजा को जब यह हाल मालूम हुआ तो सन्न रह गया। बार-बार राजकुमार के सौन्दर्य और उसकी वधू के रूप की याद करके उसके भाग्य पर रोता था। अब राजा को यह चिन्ता हुई कि किसी तरह राजकुमार का मन अपनी विवाहिता स्त्री की ओर आकर्षित हो और इस चुड़ैल से छुटकारा मिले। यत्न करने से कार्य सिद्ध होता है। राजा ने जब यत्न करने का बीड़ा उठाया तो सफलता नज़र आने लगी। राजा को एक जादूगर मिल

गया। उसने कहा—"मैं अपनी विद्या से राजकुमार को चुड़ैल के चक्कर से निकाल दूँगा। आप घबराएँ नहीं।"

यह कहकर जादूगर राजकुमार के पास पहुँचा और उसको अपनी जादू-भरी वाणी से उपदेश करने लगा। उपदेश सुनना था कि राजकुमार के होश ठिकाने आ गये और चुड़ैल को डाट-कर कहने लगा कि तूने मुझे इतने दिनों तक बहकाये रक्खा। अब मैं एक क्षण के लिए भी तेरी सूरत देखना नहीं चाहता। चुड़ैल तुरन्त वहाँ से भाग गयी। राजकुमार उसके फन्दे से निकलकर अपनी परी-समान पत्नि के पास आ पहुँचा। जब उसे इस देवी के दर्शन हुए तो आपे से बाहर हो गया। फूला न समाया। अब वह अपने को सचमुच धन्य समझने लगा।

यह दुनिया चुड़ैल के समान है। जो भोले मनुष्यों को अपने जाल में फाँस कर, मुक्ति-पथ से विचलित कर देती है। परन्तु जब जादूगर की तरह कोई सच्चा ज्ञानी मिल जाता है तो मनुष्य के मन को परमात्मा की ओर लगा देता है।

: १४ :

मूसा और चरवाहा

एक दिन हज़रत मूसा ने रास्ता चलते एक चरवाहे को यह कहते सुना—"ऐ प्यारे खुदा तू कहाँ है ? ताकि मैं तेरी ख़िदमत करूँ। तेरे मौज़े सीऊँ और सिर में कंघी करूँ। तू कहाँ है कि मैं तेरी सेवा में लग जाऊँ। तेरे कपड़ों में थेगली लगाऊँ। तेरे वस्त्र धोऊँ और ऐ प्यारे तेरे आगे दूध रक्खूँ और यदि तू बीमार हो जाये तो सम्बंधियों से अधिक तेरी सेवा-टहल करूँ। तेरे हाथ चूमूँ, पैरों की मालिश करूँ और जब सोने का वक्त हो तो तेरे बिछौने को झाड़कर साफ़ करूँ और यदि तेरा घर देखलूँ तो तेरे लिए नित्यप्रति घी और दूध पहुँचाया करूँ। चुपड़ी हुई रोटियाँ और पीने के लिए स्वादिष्ट दही और मठा यह सब चीज़ें तैयार करके साँझ-सवेरे लाता रहूँ। मतलब यह है कि मेरा काम लाना हो और तेरा काम खाना हो। तेरे दर्शनों के लिए मेरी उत्सुकता हद से ज़्यादा बढ़ गयी है।"

यह चरवाहा इस तरह की निराधार बातें कर रहा था। मूसा ने पूछा--"अरे भाई तू यह बातें किससे कह रहा है ?" उस आदमी ने

जवाब दिया—"उससे जिसने हमको उत्पन्न किया। यह पृथ्वी और आकाश बनाये उससे।" हज़रत मूसा ने कहा—"अरे अभागे! तू धर्म-शील होने के बजाय काफ़िर हो गया क्या? काफ़िरों कैसी निरर्थक बातें कर रहा है। अपने मुँह में रुई ठूँस। तेरे कुफ्र की दुर्गंध सारे संसार में फैल रही है। तेरे अधर्म ने धर्म-रूपी कमख्वाब में थेगली लगादी। मौज़े और कपड़े तुझे ही शोभा देते हैं। भला सूर्य को इन चीज़ों की क्या आवश्यकता है? यदि तू ऐसी बातें करने से नहीं रुकेगा तो शर्म के कारण सारी सृष्टि जलकर राख हो जायेगी। यदि तू खुदा को न्यायकारी और सर्वशक्तिमान मानता है तो इस बेहूदी बकवास से क्या लाभ? खुदा को ऐसी सेवा की आवश्यकता नहीं। अरे गँवार! ऐसी बातें तू किससे कर रहा है? वह ज्योतिस्वरूप (परमेश्वर) तो शरीर और आवश्यकताओं से रहित है। दूध तो वह पिये जिसका शरीर और आयु घटे बढ़े। और मौज़े वह पहने जो पैरों के अधीन हो।"

चरवाहे ने कहा--"ऐ मूसा! तूने मेरा मुँह बन्द कर दिया और पछतावे के कारण मेरा शरीर भुनने लगा।" यह कहकर उस चरवाहे ने कपड़े फाड़ डाले, एक ठंडी साँस ली और जंगल में घुस कर ग़ायब हो गया। इधर मूसा को आकाशवाणी सुनायी दी—"ऐ मूसा! तूने हमारे बन्दे को हमसे क्यों जुदा कर दिया? तू संसार में मनुष्यों को मिलाने आया है या अलग करने। जहाँ तक सम्भव हो जुदा करने का इरादा न कर। हमने हर एक आदमी का स्वभाव अलग-अलग बनाया है और प्रत्येक मनुष्य

को भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियाँ दी हैं। जो बात इसके लिए अच्छी है वह तेरे लिए बुरी। एक बात इसके हक़ में शहद का असर रखती है और वही तेरे लिये विष का? जो इसके लिए प्रकाश है वह तेरे लिए आग। इसके हक़ में गुलाब का फूल और तेरे लिए काँटा है। हम पवित्रता, अपवित्रता, कठोरता, और कोमलता सबसे अलग हैं। मैंने इस सृष्टि की रचना इसलिए नहीं की कि कोई लाभ उठाऊँ। बल्कि मेरा उद्देश्य तो केवल यह है कि संसार के लोगों पर अपनी शक्ति और उपकार प्रगट करूँ। इनके जाप और भजन से मैं कुछ पवित्र नहीं हो जाता, बल्कि जो मोती इनके मुँह से झड़ते हैं उनसे स्वयं ही इनकी आत्मा शुद्ध होती है। हम किसीके वचन या प्रगट आचरणों को नहीं देखते। हम तो हृदय के आन्तरिक भावों को देखते हैं। ऐ मूसा बुद्धिमान मनुष्यों की प्रार्थनाएँ और हैं और दिलजलों की इबादत दूसरी है। इनका ढंग ही निराला है?"

जब मूसा ने अदृष्ट से यह शब्द सुने तो व्याकुल होकर जंगल की तरफ़ चरवाहे की तलाश में निकले। इसके पद-चिन्हों को देखते हुए सारे जंगल की ख़ाक छान डाली। प्रगट है कि पागलों का पद-चिन्ह दूसरों के पाँव के निशान से भिन्न होता है। आख़िर आपने उसे तलाश कर लिया और फ़रमाया—"तू बड़ा भाग्यवान है। तुझे आज्ञा मिल गयी। तुझे किसी शिष्टाचार या नियम की आवश्यकता नहीं। तेरे जी में जो आये कह। तेरा कुफ्र धर्म और तेरा धर्म ईश्वर-प्रेम है। अतः तेरे लिए सब कुछ

माफ़ है; बल्कि तेरे दम से ही सृष्टि क़ायम है। ऐ मनुष्य! खुदा की मर्ज़ी से तुझे माफ़ी मिल गयी। अतएव तू निस्संकोच होकर जो मुँह में आये कहदे।"

चरवाहे ने जवाब दिया—"ऐ मूसा! अब मैं इस तरह की बातें मुँह से नहीं निकालूँगा। तूने जो मेरे बुद्धि-रूपी घोड़े को कोड़ा लगाया तो वह एक छलाँग में सातवें आसमान पर जा पहुँचा। अब मेरी दशा बयान से बाहर है, बल्कि मेरे ये शब्द भी मेरी हार्दिक दशा को प्रगट नहीं करते।"

ऐ मनुष्य! तू जो ईश्वर की प्रशंसा और स्तुति करता है तेरी दशा भी इस चरवाहे से अच्छी नहीं है। तू महा अधर्मी और संसार में लिप्त है। तेरे कर्म और वचन भी निकृष्ट हैं। यह केवल उस दयालु परमात्मा की कृपा है कि वह तेरे अपवित्र उपहार को भी स्वीकार कर लेता है।

: १५ :

बुद्धिमानों का संग

एक तुर्क घोड़े पर सवार चला आ रहा था। उसने देखा कि एक सोते हुए मनुष्य के मुँह में एक साँप घुस गया। सवार ने दूर से देखकर बहुतेरा घोड़ा दौड़ाया; परन्तु मौक़ा न मिला। जब साँप को मुँह से निकालने की कोई युक्ति समझ में न आयी तो वह सोनेवाले के मुँह पर घूँसे लगाने लगा। सोनेवाला गहरी नींद से एकदम उछल पड़ा। देखा कि एक तुर्क तड़ातड़ घूँसे मारता जा रहा है। तुर्क घूँसे-पर घूँसे लगाता रहा। यहाँ तक कि सोनेवाला सहन न कर सका और भाग खड़ा हुआ। आगे-आगे वह और पीछे-पीछे तुर्क। एक वृक्ष के नीचे पहुँचे। वहाँ बहुत से सेव झड़े हुए पड़े थे। तुर्क ने कहा—"ऐ भाई ! इन सेवों में से जितने खाये जायें उतने तू खा और खबरदार कमी हरगिज़ न करना।"

तुर्क ने उसे इतने ज़्यादा सेव खिलाये कि सब खाया-पिया उगल-उगल कर मुँह से निकलने लगा। उसने तुर्क से चिल्लाकर कहा—"ऐ अमीर ! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू मेरी जान

लेने पर उतारू हो गया। यदि तू मेरे प्राणों ही का गाहक है तो तलवार के एक ही वार से मेरा जीवन समाप्त कर दे। वह भी क्या बुरी घड़ी थी जबकि मैं तुझे दिखाई दिया।" वह इसी तरह शोर मचाता और बुरा-भला कहता रहा और तुर्क बराबर मुक्के-पर-मुक्के मारता रहा। उस आदमी का सारा बदन दुखने लगा और थककर चूर-चूर हो गया। लेकिन वह तुर्क दिन छिपने तक धर-पकड़ और मार-पीट करता रहा। यहाँ तक कि पित्त के प्रकोप से इस आदमी को वमन होनी शुरू हो गयी। सारा खाया-पिया निकलने लगा और साँप भी इस क़ै के साथ बाहर निकल आया।

जब उसने अपने पेट से साँप को बाहर निकलते देखा तो भय के कारण थर-थर काँपने लगा। शरीर में जो पीड़ा घूँसों की मार से उत्पन्न हो गयी थी तुरन्त जाती रही।

वह आदमी तुर्क के पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा – "तू तो दया का अवतार है और मेरा परम हितकारी है। मैं तो मर चुका था। तूने ही मुझे नया जीवन प्रदान किया है। ऐ मेरे बादशाह! यदि तू सच्चा हाल ज़रा भी मुझे बता देता तो मैं तेरे साथ ऐसी अशिष्टता क्यों करता? परन्तु तूने तो अपनी चुप से मुझे विचलित कर दिया कि बिना कारण बताए मेरे सिर पर घूँसे मारने लगा। ऐ परोपकारी पुरुष! जो कुछ ग़लती से मेरे मुँह से निकल गया उसके लिए मुझे क्षमा करना।"

तुर्क ने कहा--"यदि मैं इस घटना का ज़रा भी संकेत कर देता

तो उसी समय तेरा पित्त पानी हो जाता और डर के मारे तेरी आधी जान निकल जाती। उस समय न तुझमें इतने सेव खाने की हिम्मत होती और न उल्टी होने की नौबत आती। इसलिए मैं तेरे दुर्वचनों को भी सहन करता रहा। कारण बताना उचित नहीं था और तुझे छोड़ना भी मुनासिब नहीं था।"

बुद्धिमानों की शत्रुता भी ऐसी होती है कि उनका दिया हुआ विष भी अमृत के समान हो जाता है। इसके विपरीत मूर्खों की मित्रता से दुख और पथभ्रष्टता प्राप्त होती है।

: १६ :

हज़रत अली और काफ़िर

हज़रत अली खुदा के शेर थे। उनका आचरण दुर्वासनाओं से मुक्त था। एक बार युद्ध में तलवार लेकर शत्रु की तरफ़ झपटे। उसने हज़रत अली के चेहरे पर थूक दिया। उसपर थूका कि यदि चाँद भी मुक़ाबले में आये तो सामने झुक जाये। परन्तु हज़रत अली अपने क्रोध को दबा गए और उसी समय तलवार फेंककर, इस काफ़िर पहलवान पर वार करने से हाथ खींच लिया। वह पहलवान आपके इस व्यवहार से ताज्जुब करने लगा कि भला दया-भाव प्रगट करने का यह क्या अवसर था ?

उसने पूछा—"तुम अभी तो मुझपर वार करना चाहते थे और अब तुरन्त ही तलवार फेंककर मुझे छोड़ दिया। इसका क्या कारण है ? तुमने ऐसी क्या बात देखी कि मुझपर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् भी मुक़ाबले से हट गये।" आपने फ़रमाया—"मैं केवल खुदा के लिए तलवार चलाता हूँ क्योंकि मैं खुदा का ग़ुलाम हूँ। अपनी इन्द्रियों का दास नहीं। मैं खुदा का शेर हूँ। दुर्वासनाओं का शेर नहीं। मेरे आचरण धर्म के

साक्षी हैं। सन्तोष की तलवार ने मेरे क्रोध को भस्म कर दिया है। ईश्वर का कोप भी मेरे ऊपर दया की वर्षा करता है।"

हज़रत पैग़म्बर ने मेरे नौकर के कान में फ़रमाया कि एक दिन वह मेरा सिर तन से जुदा करदे वह नौकर मुझसे कहता रहता है कि आप पहले मुझे ही क़त्ल कर दीजिए जिससे ऐसा घोर अपराध मुझसे न होने पाये। परन्तु मैं उसे यही जवाब देता हूँ—"जब मेरी मौत तेरे हाथ होनेवाली है तो मैं ख़ुदा के मुक़ाबले में बचने की क्यों कोशिश करूँ? इसी तरह दिन-रात मैं अपने क़ातिल को अपनी आँखों से देखता हूँ। मगर मुझे इस पर क्रोध नहीं आता। क्योंकि जिसतरह आदमी को जान प्यारी है उसीतरह मुझको मौत प्यारी है। क्योंकि इसी मौत से मुझे दूसरा (जन्नत का) जीवन प्राप्त होगा। बिना मौत मरना हमारे लिए हलाल है। और आडम्बर रहित जीवन व्यतीत करना हमारे लिए न्यामत है।"

फिर हज़रत अली ने इस पहलवान से कहा—"ऐ जवान! जबकि युद्ध के समय तूने मेरे मुँह पर थूका तो उसी समय मेरे विचार बदल गये। उस वक्त युद्ध का उद्देश आधा ख़ुदा के वास्ते और आधा तेरे जुल्म करने का बदला लेने के लिए हो गया। यद्यपि ख़ुदा के काम में दूसरे के उद्देश को सम्मिलित करना उचित नहीं है। तू मेरे मालिक की बनायी हुई मूरत है। और तू उसीकी चीज़ है। ख़ुदा की बनायी हुई चीज़ को सिर्फ़ उसीके हुक्म से तोड़ना चाहिए।"

इस काफ़िर पहलवान ने जो यह उपदेश सुना तो ज्ञान पैदा हो गया। कहा—"हाय! अफ़सोस मैं अबतक जुल्म के बीज बो रहा था। मैं तो तुझे कुछ और समझता था। लेकिन तू तो खुदा का अन्दाज़ लगाने की न सिर्फ़ तराज़ू है बल्कि उस तराज़ू की डंडी है। मैं उस ईश्वरीय ज्योति का दास हूँ जिससे तेरा जीवन दीप प्रकाशित हो रहा है। अतः मुझे अपने मज़हब का कलमा सिखा। क्योंकि तेरा पद मुझसे बहुत ऊँचा है।"

इस पहलवान के निकट जितने संबंधी और सजाति थे सबने उसी वक्त हज़रत अली का धर्म ग्रहण कर लिया। हज़रत अली ने केवल दया की तलवार से इतने बड़े दल को अपने धर्म में दीक्षित कर लिया।

दया की तलवार सचमुच ही लोहे की तलवार से श्रेष्ठ है।

: १७ :

हवा और मच्छर का मुक़दमा

एक बार एक मच्छर ने न्यायी राजा सुलेमान के दरबार में आकर प्रार्थना की—"हवा ने हमपर ऐसे-ऐसे ज़ुल्म किये हैं कि हम ग़रीब बाग़ की सैर भी नहीं कर सकते। जब फूलों के पास जाते हैं तो हवा आकर हमें उड़ा ले जाती है, जिससे हमारे सुख-साम्राज्य पर हवा के अन्याय की बिजली गिर पड़ती है और हम ग़रीब आनन्द से वंचित कर दिये जाते हैं। हे पशु-पक्षियों तथा दीनों के दुख हरनेवाले, दोनों लोकों में तेरे न्याय-शासन की धूम है। हम तेरे पास इसलिए आये हैं कि तू हमारा इन्साफ़ करे।"

पैग़म्बर सुलेमान ने मच्छर की जब यह प्रार्थना सुनी तो कहने लगे—"ऐ इंसाफ़ चाहनेवाले मच्छर! तुझको पता नहीं कि मेरे शासन-काल में अन्याय का कहीं भी नामोनिशान नहीं है। मेरे राज्य में ज़ालिम का काम ही क्या? तुझको मालूम नहीं कि जिस दिन मैं पैदा हुआ था अन्याय की जड़ उसी दिन खोद दी गयी थी। प्रकाश के सामने अंधेरा कब ठहर सकता है?"

मच्छर ने कहा—"बेशक आपका कथन सत्य है, पर हमारे ऊपर कृपा-दृष्टि रखना भी तो श्रीमान् ही का काम है। दया कीजिए और दुष्ट वायु के अत्याचारों से हमारी जाति को बचाइए।"

सुलेमान ने कहा—"बहुत अच्छा, हम तुम्हारा इंसाफ़ करते हैं, मगर दूसरे पक्ष का होना भी ज़रूरी है! जबतक प्रतिवादी उपस्थित न हो और दोनों ओर के बयानात लेखबद्ध न किये जायँ तबतक तहक़ीक़ात नहीं हो सकती, इसलिए हवा को बुलाना ज़रूरी है।"

सुलेमान के दरबार से जब वायु के नाम हुक्म पहुँचा तो वह बड़े वेग से दौड़ता हुआ हाज़िर हो गया। वायु के आते ही मच्छर न ठहर सके। उन्हें भागते ही बना। जब मच्छर भाग ही रहे थे उस समय उनसे सुलेमान ने कहा—"यदि तुम न्याय चाहते हो तो भाग क्यों रहे हो? क्या इसी बलबूते पर न्याय की पुकार कर रहे हो?" मच्छर बोला—"महाराज, हवा से हमारा जीवन ही नहीं रहता। जब वह आता है तो हमें भागना पड़ता है। यदि इस तरह न भागें तो जान नहीं बच सकती।"

यही दशा मनुष्य की है। जब मनुष्य आता है अर्थात् जबतक उसमें अहंभाव विद्यमान रहता है तो ईश्वर नहीं मिलता और जब ईश्वर मिलता है तो मनुष्य की गन्ध नहीं रहती अर्थात् उसका अहंभाव बिलकुल मिट जाता है।

: १८ :

बाज़ और बादशाह

एक बादशाह ने बाज़ पाल रक्खा था। वह इस पक्षी से बड़ा प्रेम करता था और उसे कोई कष्ट नहीं होने देता था। एक दिन बाज़ के दिल में न जाने क्या समायी कि बादशाह को छोड़कर चला गया। पहले तो बादशाह को बहुत रंज हुआ। परन्तु थोड़े दिन बाद वह उसे भूल गया बाज़ छूट कर एक ऐसे मूर्ख व्यक्ति के हाथ में पड़ गया कि जिसने पहले उसके पर काट डाले और नाखून तराश दिये और फिर एक रस्सी में बाँध कर उसके आगे घास डाल दी और कहने लगा कि तेरा पहला मालिक कैसा मूर्ख था कि जिसने नाखून भी साफ़ न कराये बल्कि उल्टे बढ़ा दिये। देख मैं, आज तेरी कैसी सेवा कर रहा हूँ। तेरे बढ़े हुए बालों को काट कर बड़ी सुन्दर हजामत बना दी है और नाखूनों को तराश कर छोटा कर दिया है।

तू दुर्भाग्य से ऐसे गँवार के पल्ले पड़ गया था। जो देख भाल करना भी नहीं जानता था। अब तुम यहीं रहो और देखो कि मैं तुमको किस तरह घास चरा-चरा कर हृष्ट-पुष्ट बनाता हूँ।

पहले तो बादशाह ने बाज़ का ख़याल छोड़ दिया था, लेकिन कुछ दिन बाद उसे फिर उसकी याद सताने लगी। उसने उसको बहुत ढुँढवाया, परन्तु कहीं पता न चला। तब बादशाह स्वयं बाज़ की तलाश में निकला। चलते-चलते वह उसी स्थान पर पहुँच गया, जहाँ कि बाज़ अपने पर कटवाये रस्सी में बँधा घास में मुँह मार रहा था। बादशाह को उसकी यह दशा देखकर बड़ा दुख हुआ और उसे साथ लेकर वापस चला आया। वह रास्ते में बार-बार यही कहता रहा—"तू स्वर्ग से नरक में क्यों गया था?"

बाज़ की तरह आदमी भी, अपने स्वामी परमात्मा को छोड़कर दुःख उठाता है। संसार की माया उसे पंगु बना देती है और मूर्ख मनुष्य अपने मूर्खता के कामों को भी बुद्धिमानी का कार्य समझते हैं।

: १९ :

मित्र की परख

मिस्र-निवासी हज़रत जुन्नून ईश्वर-प्रेम में विह्वल होकर पागलों-जैसे आचरण करने लगे। शासन-सूत्र गुण्डों के हाथ में था। उन्होंने जुन्नून को कैद में डाल दिया। जब दुष्ट मनुष्यों को अधिकार प्राप्त होता है तो मंसूर-जैसा सन्त भी सूली पर लटका दिया जाता है। जब अज्ञानियों का राज होता है तो वे नबियों तक को क़त्ल करा देते हैं।

जुन्नून पैरों में बेड़ियाँ और हाथों में हथकड़ियाँ पहने क़ैद-खाने में पहुँचे। इनके भक्त हाल पूछने के लिए कैदखाने के चारों ओर जमा हो गये। वे लोग आपस में कहने लगे—हो सकता है कि जान-बूझकर पागल बने हों। इसमें कुछ न कुछ भेद ज़रूर है, क्योंकि ये ईश्वर-भक्तों में सर्वोपरि हैं। ऐसे प्रेम से भी परमात्मा बचाये जो पागलपन के दर्जे तक पहुँचा दे।

इस तरह की बातें करते-करते जब लोग हज़रत जुन्नून के पास पहुँचे तो उन्होंने दूर से ही आवाज़ दी कि कौन हो? ख़बरदार, आगे न बढ़ना!

उन लोगों ने निवेदन किया—"हम सब आपके भक्त हैं और कुशल-समाचार पूछने के लिए सेवा में आये हैं। महात्मन्! आपका क्या हाल है? आपको यह पागलपन का झूठा दोष क्योंकर लगाया गया है? हमसे कोई हाल न छिपाकर इस बात को साफ़-साफ़ बतायें। हम लोग आपके हितैषी हैं। अपने भेदों को मित्रों से न छिपाइए।"

जुन्नून ने जब ये बातें सुनीं तो उन्होंने इन लोगों की परीक्षा करने का विचार किया। वे उन्हें बुरी-बुरी गालियाँ देने और पागलों की तरह ऊट-पटाँग बकने लगे। पत्थर-लकड़ी, जो हाथ लगा, फेंक-फेंककर मारने लगे।

यह देखकर लोग भाग निकले। जुन्नून ने क़हक़हा लगाकर सिर हिलाया और एक साधू से कहा—"ज़रा इन भक्तों को तो देखो। ये दोस्ती का दम भरते हैं। दोस्तों को तो अपने मित्र का कष्ट अपनी मुसीबतों के बराबर होता है, और उन्हें मित्र से जो कष्ट पहुँचे उसे वे सहर्ष सहन करते हैं।"

मित्र के कारण मिले हुए कष्टों और मुसीबतों पर खुश होना मित्रता का चिह्न है। मित्र का उदाहरण सोने के समान है और उसके लिए परीक्षा अग्नि के तुल्य है। शुद्ध सोना अग्नि में पड़कर निर्मल और निर्दोष होता है।

: २० :

मोह का जाल

एक लड़का अपने बाप के ताबूत पर फूट-फूटकर रोता और सिर पीटता था—"पिताजी, लोग तुम्हें कहाँ ले जा रहे हैं ? ये तुम्हें एक अँधेरे गड्ढे में डाल देंगे, जहाँ न क़ालीन है न बोरिया है, न वहाँ रात को जलाने के लिए दीपक है, और न खाने के लिए भोजन। न इसका दरवाज़ा खुला है और न बन्द है। न वहाँ पड़ोसी हैं, जिनसे सहारा मिल सके । तुम्हारा पवित्र शरीर, जिसे सम्मानपूर्वक लोग चूमते थे, उस सूने और अँधेरे घर में जो रहने के बिल्कुल अयोग्य है, जिसमें रहने से चेहरे का रूप और सौन्दर्य जाता रहता है, क्योंकर रहेगा ?" इस तरह वह लड़का क़ब्र का हाल बयान करता था और खून के आँसू उसकी आँखों से टपकते जाते थे।

एक मसख़रे ने ये शब्द सुनकर अपने बाप से कहा—"पिता-जी ! भगवान् की क़सम, मालूम होता है कि ये लोग इस लाश को हमारे घर ले जा रहे हैं ।" बाप ने मसखरे बेटे से कहा—"अरे मूर्ख यह क्या अनुचित बात कहता है।" मसख़रे ने जवाब दिया—"जो

निशानियाँ इसने बतायी हैं उन्हें तो सुनिए। ये जो चिह्न इसने एक-एक करके गिने हैं वे वास्तव में सब-के-सब हमारे घर के हैं। हमारे घर में भी न बोरिया है, न चिराग़ है, न खाना है, न दरवाज़ा है, न चौक है और न कोठा है।"

इस तरह के शिक्षा ग्रहण करने योग्य चिन्ह सब मनुष्यों की दशा में विद्यमान हैं परन्तु वे सांसारिक मोह में फँसे रहने के कारण इनपर ध्यान नहीं देते। वह हृदय जिसमें ईश्वरीय ज्योति का प्रकाश नहीं पहुँचता, नास्तिक की आत्मा की तरह अन्धकारमय है। ऐसे हृदय से तो क़ब्र ही अच्छी है।

: २१ :

पथदर्शक

हज़रत मुहम्मद के एक अनुयायी बीमार पड़े और सूखकर काँटा हो गये। वे उसकी बीमारी का हाल पूछने के लिए गये। अनुयायी हज़रत के दर्शनों से ऐसे सँभले कि मानो खुदा ने उसी समय नया जीवन दे दिया हो। कहने लगे—"इस बीमारी ने मेरा भाग ऐसा चमकाया कि दिन निकलते ही यह बादशाह मेरे घर आया। यह बीमारी और बुखार कैसा भाग्यवान है! यह पीड़ा और अनिद्रा कैसी शुभ है!" हज़रत पैग़म्बर ने इस बीमार से कहा—"तूने कोई अनुचित प्रार्थना की है। तूने भूल में विष खा लिया है। याद कर तूने क्या दुआ की ?" बीमार ने कहा—'मुझे याद नहीं। परन्तु मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि आपकी कृपा से वह दुआ याद आ जाये।"

आखिर हज़रत मुहम्मद की कृपा से वह दुआ उसको याद आ गयी।

उसने कहा—"लीजिए वह दुआ मुझे याद आ गयी। आप सदैव अपराधियों को पाप करने से मना करते थे

और पापों के दंड का डर दिलाते थे। इससे मैं व्याकुल हो जाता था। न मुझे अपनी दशा पर संतोष था और न बचने की राह दिखायी देती थी। न प्रायश्चित्त की आशा थी, न लड़ने की गुञ्जाइश और न भगवान् को छोड़ कोई सहायक दिखायी देता था। मेरे हृदय में ऐसा भ्रम पैदा हो गया था कि मैं बार-बार यही प्रार्थना करता था कि हे ईश्वर! मेरे कर्मों का दण्ड मुझे इसी संसार में दे डाल जिससे मैं सन्तोष के साथ मृत्यु का आलिंगन कर सकूँ। मैं इसी प्रार्थना पर अड़कर बैठ जाता था। धीरे-धीरे बीमारी ऐसी बढ़ी कि घुल-घुलकर मरने लगा। अब तो यह हालत हो गयी है कि खुदा की याद का भी खयाल नहीं रहता और अपने पराये का ध्यान भी जाता रहा। यदि मैं आपके दर्शन न करता तो प्राण अवश्य निकल जाते। आपने बड़ी कृपा की।"

मुहम्मद साहब ने कहा—"खबरदार, ऐसी प्रार्थना फिर न करना। ऐ बीमार चींटी, तेरी यह सामर्थ्य कहाँ कि खुदा तुझपर इतना बड़ा पहाड़ रक्खे?" अनुयायी ने कहा—"तोबा! तोबा! ऐ सुलतान! अब मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि कोई प्रार्थना बेसोचे-समझे न करूँगा। ऐ पथप्रदर्शक! इस निर्जन बन में आप ही मुझे मार्ग दिखाइए और अपनी दया से मुझे शिक्षा दीजिए।"

हज़रत रसूल ने बीमार से कहा—"तू खुदा से दुआ कर कि वह तेरी कठिनाइयों को आसान करे। ऐ खुदा! तू लोक और परलोक में हमें धैर्य और सुख प्रदान कर। जब हमारा निर्दिष्ट स्थान तू ही है तो रास्ते की मंजिल को भी सुखमय बना दे।"

: २२ :

लुक़मान की परीक्षा

हज़रत लुक़मान यद्यपि स्वयं गुलाम और गुलाम पिता के पुत्र थे परन्तु उनका हृदय ईर्ष्या और लोभ से रहित था। उनका स्वामी भी प्रगट में तो मालिक था परन्तु वास्तव में इनके गुणों के कारण दिल से इनका गुलाम हो गया था। वह इनको कभी का आज़ाद कर देता पर लुक़मान अपना भेद छिपाये रखना चाहते थे और इनका स्वामी इनकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करना चाहता था। उसे तो हजरत लुकमान से इतना प्रेम और श्रद्धा हो गयी थी कि जब नौकर इसके लिए खाना लाते तो वह तुरन्त लुकमान के पास आदमी भेजता ताकि पहले वह खालें और उनका बचा हुआ वह खुद खाये। वह लुक़मान का जूठा खाकर खुश होता था और यहाँ तक नौबत पहुँच गयी थी कि जो खाना वह न खाते, उसे वह फेंक देता था और यदि खाता भी था तो बड़ी अरुचि के साथ।

एक बार किसी ने उनके मालिक के लिए खरबूजे भेजे। मालिक ने गुलाम से कहा—"जल्दी जाओ और मेरे बेटे लुक़मान

को बुला लाओ।" लुकमान आये और सामने बैठ गये। मालिक ने छुरी उठायी और अपने हाथ से खरबूजा काटकर एक फाँक लुकमान को दी। उन्होंने ऐसे शौक से खायी कि मालिक ने दूसरी फाँक दी। यहाँतक कि सत्रहवीं फाँक तक वे बड़े शौक से खाते रहे। जब केवल एक टुकड़ा बाकी रह गया तो मालिक ने कहा कि इसको मैं खाऊँगा। जिससे मुझे भी यह मालूम हो कि खरबूजा कितना मीठा है?"

जब मालिक ने खरबूजा खाया तो कड़वाहट से कण्ठ में चिरमिराहट लगने लगी और जीभ में छाले पड़ गये। घंटे भर तक मुँह का स्वाद बिगड़ा रहा। तब उसने आश्चर्य के साथ हजरत लुकमान से पूछा—"ऐ दोस्त तूने इस ज़हर को किस तरह खाया और इस विष को अमृत क्यों समझ लिया? इसमें तो कोई संतोष की बात नहीं है। तूने खाने से बचने के लिए कोई बहाना क्यों नहीं किया?"

हज़रत लुकमान ने जवाब दिया—"मैंने तुम्हारे हाथ से इतने भोजन खाये हैं कि लज्जा के कारण मेरा सिर नीचे झुका जाता है। इसीसे मेरे दिल ने यह गवारा नहीं किया कि कड़वी चीज़ आपके हाथ से न खाऊँ। मैं केवल कड़वेपन पर शोर मचाने लगूँ तो सौ रास्तों की ख़ाक मेरे अंगों पर पड़े। ऐ मेरे स्वामी! तुम्हारे सदैव शक्कर प्रदान करनेवाले हाथ ने इस खरबूजे में कड़वाहट कहाँ छोड़ी थी कि मैं इसकी शिकायत करता?"

: २३ :

मूर्ख संत

एक मूर्ख संत ईसा के साथ यात्रा कर रहा था। उसने गहरे गड्ढे में हड्डियाँ देखकर कहा—"हज़रत! वह कौनसा पवित्र नाम है जिसके प्रभाव से तू मुर्दों को जिन्दा करता है? मुझे भी तू वह पवित्र वाक्य सिखा दे तो मैं भी इन पुरानी हड्डियों में जान डाल दूँ।" हजरत ईसा ने फ़रमाया—"तू चुप रह। यह काम तेरा नहीं है। तेरी आत्मा और तेरी वाणी इसके योग्य नहीं।"

मूर्ख ने कहा—"यदि मैं इसका अधिकारी नहीं, तो तू ही इन हड्डियों पर मंत्र फूँक।"

ईसा ने अपने दिल में कहा—"हे ईश्वर, यह भेद क्या है? यह मूर्ख इतना आग्रह क्यों कर रहा है? इस बीमार को अपनी चिन्ता क्यों नहीं और इस मुर्दे को अपनी जान की फ़िक्र क्यों नहीं? इसने अपने मुर्दे को छोड़ दिया है और पराये मुर्दे जिलाना चाहता है।" तब ईश्वरीय सन्देश प्राप्त हुआ—अभागे को अभागे की ही तलाश होती है; क्योंकि काँटों का उगना उनके बोये जाने का बदला है। जब हजरत ईसा ने देखा कि वह मूर्ख साथी बिना

तर्क-वितर्क के एक पग भी आगे धरना नहीं चाहता और अपनी मूर्खता के कारण कोई सीख भी ग्रहण नहीं करना चाहता, बल्कि अपनी नासमझी के कारण मेरी अनुदारता समझे हुए है, तब उन्होंने इसकी प्रार्थना के अनुसार उन हड्डियों पर ईश्वर का नाम लेकर मन्त्र फूँका। ईश्वर की दया से उन हड्डियों में जान आ गयी। अचानक उसने देखा कि वह भयानक सिंह था। शेर ने एक छलाँग मारी और पंजा मारकर इस मनुष्य को फाड़ डाला और उसकी गर्दन तोड़कर कलेजा निकाल दिया। उसका ढाँचा ऐसा रह गया कि उसमें जैसे कभी मांस था ही नहीं।

हज़रत ईसा ने शेर से पूछा कि तूने इसे इतनी जल्दी क्यों फाड़ डाला? शेर ने उत्तर दिया—क्योंकि आप इससे नाराज हो गये थे। हज़रत ईसा ने पूछा—इसका खून तूने क्यों नहीं पिया? शेर ने उत्तर दिया कि मेरे भाग्य में भोजन नहीं था। यदि मेरे लिए संसार में जीविका होती तो मैं मरता ही क्यों?

वह मनुष्य दंड के योग्य है जो उस गधे के समान है, जो मीठे पानी को पैर मारकर गदला कर देता है। यदि नदी के मूल्य को गधा समझता तो पाँव रखने की अपेक्षा उसमें अपना सिर रखता।

: २४ :

हुदहुद और कौआ

जब सुलेमान के उत्तम शासन की धूम मची, तो सब पक्षी उनके सामने विनीत भाव से उपस्थित हुए। और जब उन्होंने यह देखा कि सुलेमान उनके दिल का भेद जाननेवाला और उनकी बोली समझने में समर्थ है तो पक्षियों का प्रत्येक समूह बड़े अदब के साथ दरबार में उपस्थित हुआ।

सब पक्षियों ने अपनी चहचहाहट छोड़ दी और सुलेमान की संगति में आकर मनुष्यों से भी अधिक उत्तम बोली बोलने लगे। सब पक्षी अपनी-अपनी चतुराई और बुद्धिमानी प्रगट करते थे। यह आत्म-प्रशंसा कुछ शेखी के कारण न थी; बल्कि वे सुलेमान के प्रति पक्षी-जगत् के भाव प्रगट करना चाहते थे, जिससे सुलेमान को उचित आदेश देने और प्रजा की भलाई करने में सहायता मिले। होते-होते हुदहुद की बारी आयी। उसने कहा—"ऐ राजा! एक ऐसा गुण जो सबसे तुच्छ है मैं बतलाता हूँ क्योंकि संक्षिप्त बात ही लाभकारी होती है।"

सुलेमान ने पूछा कि वह कौन सा गुण है? हुदहुद ने उत्तर

दिया—"जब मैं ऊँचाई पर उड़ता हूँ तो पानी को, चाहे वह पाताल में भी हो, देख लेता हूँ और साथ ही यह भी देख लेता हूँ कि पानी कहाँ है, किस गहराई में है और किस रङ्ग का है ? यह भी जान लेता हूँ कि वह पानी धरती में से उबल रहा है या पत्थर से रिस रहा है ? ऐ सुलेमान ! तू अपनी सेना के साथ मुझ-जैसे जानकार को भी रख।"

हज़रत सुलेमान ने कहा—"अच्छा तू बिना पानीवाले स्थानों और ख़तरनाक रेगिस्तानों में हमारे साथ रहा कर जिससे तू हमारा मार्ग भी दिखाता रहे और साथ रहकर पानी की खोज भी करता रहे।"

जब कौए ने सुना कि हुदहुद को यह आज्ञा दे दी गयी अर्थात् उसे आदर मिल गया है तो डाह हुई और उसने हज़रत सुलेमान से निवेदन किया कि हुदहुद ने बिल्कुल झूठ कहा है और गुस्ताखी की है। यह बात शिष्टाचार के खिलाफ है कि बादशाह के आगे ऐसी झूठ बात कही जाये जो पूरी न की जा सके। यदि सचमुच उसकी निगाह इतनी तेज होती तो मुट्ठी भर धूल में छिपा हुआ फन्दा क्यों नहीं देख पाता, जाल में क्यों फँसता और पिंजरे में क्यों गिरफ़्तार होता ?

हज़रत सुलेमान बोले—"क्यों रे हुदहुद ! क्या यह सच है कि तू मेरे आगे जो दावा करता है वह झूठ है ?" हुदहुद ने जवाब दिया—"ऐ राजन् ! मुझ निर्दोष ग़रीब के विरुद्ध शत्रु की शिकायतों पर ध्यान न दीजिए। अगर मेरा दावा ग़लत

हो तो मेरा यह सिर हाजिर है। अभी गर्दन उड़ा दीजिए। रही बात मृत्यु और परमात्मा की आज्ञा से गिरफ़्तारी की, सो इसका इलाज मेरे क्या किसी के भी पास नहीं है। यदि ईश्वर की इच्छा मेरी बुद्धि के प्रकाश को न बुझाये तो मैं उड़ते-उड़ते ही फन्दे और जाल को भी देखलूँ। परन्तु जब ईश्वर की मर्जी ऐसी ही हो जाती है तो अकल पर पर्दा पड़ जाता है। चन्द्रमा काला पड़ जाता है और सूरज ग्रहण में आ जाता है। मेरी बुद्धि और दृष्टि में यह ताकत नहीं है कि परमात्मा की मर्ज़ी का मुकाबला कर सके ?"

: २५ :

लोभी

एक गरीब मनुष्य क़ैद में डाला गया। वह ऐसा खाऊपीर था कि सारे कैदियों का खाना खा जाता। किसी को पेट भर रोटी न मिलती थी। वह इतना हथ-चला था कि बहुत जल्दी रोटी उड़ा लेता था। न्यायाधीश का वकील जेल की जाँच करने आया तो बन्दियों ने शिकायत की कि हमारा सलाम क़ाज़ी को पहुँचाकर इस नीच पेटू क़ैदी की हरकतों का हाल कहना कि इसने ढेरों भोजन निगलने में बड़ा नाम कमाया है। कोई क़ैदी एक ग्रास भी नहीं खा सकता। भले वह भोजन करते समय कितना ही होशियारी से काम ले। यह पेटू क़ैदी तुरन्त वहाँ आ पहुँचता है और अधिक भोजन करने के पक्ष में यह दलील देता है कि खुदा ने "कुलवा" अर्थात् "खाऊ" का हुक्म दिया है। यह दुष्ट क़ैदी भोजन के समय मक्खी की तरह भिनभिनाता हुआ बिना बुलाये आ पहुँचता है। इसके आगे ६० आदमियों का खाना भी कोई चीज़ नहीं और जो इसे मना करो तो बहरा बन जाता है। भगवान् आपका भला करे! या तो क़ैदख़ाने से इस

भैंसे को निकाल दें या धर्म-खाते से इसकी खुराक नियत करदें। आपके न्याय से सारी प्रजा प्रसन्न है। हमारी सुनायी भी होनी चाहिए। वकील ने न्यायाधीश की सेवा में उपस्थित होकर क़ैदियों की शिकायतें पेश कीं। क़ाज़ी ने उसको क़ैदख़ाने से बुलवाया और अपने कर्मचारियों द्वारा भी जांच करायी। क़ैदियों की शिकायतें सच्ची साबित हुईं।

क़ाज़ी ने उस ग़रीब क़ैदी से कहा—"इस क़ैदख़ाने से दूर हो और अपने घर में जाकर मर।" उसने जवाब दिया—"आपकी कृपा-दृष्टि ही मेरा घर-बार है और काफ़िर की तरह मेरी जन्नत आपका क़ैदख़ाना है। यदि तुम मुझसे रुष्ट होकर क़ैदख़ाने से निकालते हो तो मैं भूखा-प्यासा मर जाऊँगा।"

न्यायाधीश ने आज्ञा दी कि इसे शहर में घुमाओ और घोषणा करदो कि यह बिल्कुल कंगाल और निर्लज्ज है। कोई मनुष्य भूल से भी क़र्ज़ न दे। यदि भविष्य में कोई इसके विरुद्ध दावा करेगा तो सबूत मिलने पर भी मैं इसे क़ैद में नहीं डालूँगा। इसकी कङ्गाली सिद्ध हो चुकी है। किसी भी तरह का नक़द सामान इसके पास नहीं है। तब क़ाज़ी के सिपाही एक लकड़हारे का ऊँट पकड़ लाये। ऊँट की पीठ पर यह पेटू क़ैदी बैठा हुआ था। ऊँट का मालिक पीछे दौड़ रहा था। इसी तरह उसको मुहल्ले और गलियों में फिराते रहे। यहाँतक कि सब नगर-निवासयों ने इसे देख लिया और प्रत्येक स्नानागार और बाज़ार के लोगों ने इसे पहचान लिया। मनादी करनेवालों में तुर्क, रूमी इत्यादि थे। ये सब

ऊँची आवाज़ से कहते जाते थे कि यह मनुष्य बिल्कुल कंगाल है। रोटियों का चोर और बड़ा ही निर्लज्ज है। इसके पास कुछ नहीं। कोई इसको एक छदाम भी कर्ज़ न दे। यह खोटा, दग़ाबाज़ और ढोल की तरह पोला है।

इस तरह दिन भर शहर में चक्कर लगाने के पश्चात् जब वह शाम को ऊँट से नीचे उतरा तो ऊँटवाले ने कहा मेरा मुकाम यहाँ से बहुत दूर है। पहुँचने में देर लगेगी। तू प्रातःकाल से मेरे ऊँट पर बैठा रहा और तेरे साथ चलकर घास खोदने से भी ज्यादा परिश्रम मुझे करना पड़ा। उस ग़रीब ने जवाब दिया-- "तू समझा भी मैं क्यों फिराया गया? और आज सारे दिन क्या हुआ? तेरा होश भी ठिकाने है? क्या तेरे दिमाग़ में ज़रा भी समझ नहीं है? तू अच्छी तरह सुन चुका है कि सातवें आसमान तक मेरी कंगाली का ढँढोरा पीटा गया। परन्तु मालूम होता है लोभ के कारण तू कुछ भी न सुन सका क्योंकि लोभ मनुष्य को बहरा कर देता है। ढेलों और पत्थरों तक ने सुन लिया कि यह मनुष्य असहाय और निर्धन है। सुबह से शाम तक लोग मुनादी करते रहे। परन्तु ऊँट का मालिक लोभ में लिप्त था वह फिर भी यही समझता रहा कि सम्भव है इस महाकंगाल से भी कुछ मिल जाये।"

: २६ :

चोर की चालाकी

एक मनुष्य ने अपने घर में एक चोर को देखा और उसके पीछे इतना दौड़ा कि देह थककर चूर-चूर हो गयी। जब चोर के इतना पास पहुँच गया कि उसको पकड़ ले तो दूसरे चोर ने पुकारकर कहा—"अरे मियाँ! यहाँ आओ। यह तो देखो कि यहाँ कितने निशान मौजूद हैं। जल्दी लौट कर आओ।" गृहस्वामी ने यह आवाज़ सुनी तो उसे डर लगने लगा। सोचने लगा शायद दूसरे चोर ने किसी को मार डाला है या वह मुझपर भी पीछे से टूट पड़े। हो सकता है कि बाल-बच्चों पर भी वह हाथ साफ़ करे। तो फिर इस चोर के पकड़ने से क्या लाभ होगा? यह सोचकर पहले चोर का पीछा करना छोड़ दिया और लौटकर वापस आया और उस आदमी से पूछा कि दोस्त! क्या बात है। तुम क्यों चीख रहे थे? वह कहने लगा—"यह देखिए चोर के पैरों के निशान। वह दुष्ट अवश्य इस रास्ते से भागकर गया है। यह खोज मौजूद है। बस इसी को देखते-भालते उसके पीछे चले जाओ।"

गृहस्वामी ने कहा—"अरे मूर्ख ! मुझे खोज क्या बताता है मैंने असली चोर को दबा लिया था। तेरी चीख-चिल्लाहट सुनकर छोड़ा और तुझ गधे को आदमी समझा। अरे बेवकूफ़ ! यह तू क्या बेहूदा बकवाद करता है। मैं तो लक्ष्य को पहुँच चुका था। भला निशान क्या चीज है। या तो तू गुण्डा है या बिल्कुल मूर्ख है। हो सकता है कि तू ही चोर हो और यह सब हाल तुझे मालूम हो। मैं तो अपने शत्रु पर अधिकार प्राप्त कर चुका था। तू ने उसे यह कहकर छुड़ा दिया कि देखो यहाँ निशान हैं।"

मनुष्य को अधिक लाभ का लालच देकर असली भलाई से रोका जा सकता है। इस तरह लाभ के बजाय हानि उठानी पड़ती है।

: २७ :

चूहा और ऊँट

एक चूहे को ऊँट की नकेल हाथ लग गयी। वह बड़ी शान से खींचता हुआ चला। ऊँट जो तेजी से उसके पीछे चला तो चूहे के दिमाग़ में यह घमण्ड पैदा हो गया कि मैं भी पहलवान हूँ। ऊँट चूहे के भावों को ताड़ गया और दिल में सोचा, अच्छा तुझे इसका मज़ा चखाऊँगा। चलते-चलते एक बड़ी नदी के किनारे पहुँचे जहाँ इतना गहरा पानी था कि हाथी भी डूब जाये। चूहा वहीं ठिठककर बैठ गया।

ऊँट ने कहा—"जङ्गलों और पहाड़ों के साथी, तुम क्यों रुक गये और इस समय क्या चिन्ता है? आओ साहस करके नदी में उतरो। तुम तो सरदार और आगे-आगे चलनेवाले हो, बीच रास्ते में ठहरकर हिम्मत न हारो।"

चूहे ने जवाब दिया—"नदी का पाट बहुत चौड़ा है और मुझे इसमें डूब जाने का भय है।"

ऊँट ने कहा—"अच्छा, मैं देखूँ पानी कितना गहरा है।" यह कहकर, नदी में पैर रक्खा और कहा अन्धे चूहे, इसमें तो सिर्फ

जाँघ तक पानी है। तू ऐसा विचलित और परेशान क्यों हो गया।" चूहे ने कहा—"जो चीज़ तेरे आगे चींटी है, वही हमारे लिए अजगर है, क्योंकि जाँघ-जाँघ का भी फर्क है। यदि पानी तेरी जाँघ-जाँघ तक है तो मेरे सिर से भी गजों ऊँचा होगा।" ऊँट ने कहा—"ख़बरदार फिर ऐसी गुस्ताखी न करना। नहीं तो स्वयं हानि उठायेगा। अपने जैसे चूहों के आगे तुम चाहे कितनी ही डींग हाँको। परन्तु ऊँट के आगे चूहा जीभ नहीं हिला सकता।"

चूहे ने कहा—"मैं तोबा करता हूँ; ईश्वर के लिए इस खतरनाक पानी से मेरी जान बचाओ।" ऊँट को दया आयी और कहा—"अच्छा मेरे कोहान पर चढ़कर बैठ जा। इस तरह आर-पार होना मेरा काम है। तुझ जैसे हजारों को नदी पार करा चुका हूँ।"

ऐ मनुष्य जब तू पैग़म्बर नहीं तो निर्दिष्ट मार्ग से चल, जिससे कि कुएँ खाई से बचकर आसानी से अपने लक्ष्य पर पहुँच जाये। जब तू बादशाह नहीं तो प्रजा बनकर रह और जब तू मल्लाह नहीं तो नाव को न चला। ताँबे की तरह रसायन का सहारा ले। ए मनुष्य ! तू महापुरुषों की सेवा कर।

: २८ :

निःस्वार्थ दान

हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के ज़माने में एक शहर में आग लग गयी। वह ऐसी प्रचंड अग्नि थी जो पत्थर को भी सूखी लकड़ी की तरह जलाकर राख कर देती थी। वह मकान और मुहल्लों को भी जलाती हुई पक्षियों के घौसलों तक पहुँची और अंत में उनके परों में भी लग गयी। इस आग की लपटों ने आधा शहर भून डाला। यहाँ तक कि पानी भी इस आग को न बुझा सका। लोग पानी और सिरका बरसाते थे, परन्तु ऐसा मालूम होता था कि पानी और सिरका उल्टा आग को प्रज्वलित कर रहे हैं। अन्त में प्रजा-जन हज़रत उमर के पास दौड़े आये और निवेदन किया कि आग किसी पानी से भी नहीं बुझती। आपने फ़रमाया—"यह आग भगवान के कोप का चिह्न है और यह तुम्हारी कंजूसी की आग का एक शोला है। अतः पानी छोड़ दो और रोटी बाँटनी शुरू करो। यदि तुम भविष्य में मेरी आज्ञा का पालन करना चाहते हो तो कंजूसी से हाथ खींच लो।" जनता ने जवाब दिया-"हमने पहले से ख़ैरात के दरवाज़े खोल रक्खे हैं।

और हम सदैव दया और उदारता का व्यवहार करते रहे हैं।"

हज़रत उमर ने उत्तर दिया—"यह दान तुमने निष्काम भावना से नहीं किया। बल्कि जो कुछ तुमने दिया है वह अपना बड़प्पन प्रगट करने और प्रसिद्धि के लिए दिया है। ईश्वर के भय और परोपकार के लिए नहीं दिया। ऐसे दिखाने की उदारता और दान से कोई लाभ नहीं है।"

: २६ :

सच्चा प्रेम

परी के समान एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। वह रास्ता चलते हुए किसी कारण से खड़ी होगयी। उसने देखा कि एक आदमी उसकी तरफ़ चला आ रहा है। जब पास आया तो उस स्त्री पर ऐसा मोहित हुआ कि उसे तन-मन की सुधि तक न रही। जब ज़रा होश हुआ तो उस स्त्री की तरफ़ देखने लगा और फिर ऐसा आपे से बाहर हुआ कि उस सुन्दर रूप को अपने बाहु-पाश में बन्दी बनाने को तैयार हो गया। इस इरादे से वह आगे बढ़ा ही था कि स्त्री तुरन्त पीछे हट गयी और कहने लगी—"क्या बात है जो इस तरह बढ़े चले आ रहे हो? और सभ्यता की सीमा से बाहर जा रहे हो।"

पुरुष ने जवाब दिया—"यह सब तेरे रूप का जादू है। तेरे हाव-भावों ने तीर बरसाये हैं। क्या कहूँ तेरे सौन्दर्य ने मेरे हृदय को छीन लिया है? और जब अपने ऊपर तेरा अधिकार होते देखा है तो मुझे भी यह साहस होगया कि अपनी रक्षा के लिए आगे बढ़कर वार करना चाहिए। अब तो मैं तेरा

ही इच्छुक हूँ। जबतक तुझे न पालूँ शान्ति नहीं मिल सकती।"

वह स्त्री बोली—"मेरे पीछे मेरी एक दासी है। वह मुझसे भी अधिक सुन्दरी है। जब तू उसे देखेगा तो बड़ा खुश होगा। देख वह सामने से चली आरही है।"

पुरुष ने पीछे मुड़कर देखा। दासी का कहीं पता न चला। जब देखते देखते थक गया तो उस सुन्दरी ने बड़े जोर से एक तमाचा मारा और बोली—"ऐ कपटी! तुझको शर्म नहीं आती कि मेरे प्रेम का दावा करता हुआ भी दूसरे की तलाश करता है? तुझको प्रेमी बनने का अधिकार नहीं। तू प्रेमी नहीं बल्कि धोखेबाज है।"

हे आत्मन्! तू केवल परमात्मा का प्रेमी बन और माया-रूपी दुनिया चाहे कितनी ही सुन्दर हो, उससे मन न लगा। यहाँ तक कि सिवा परमात्मा के किसी से भी मिलने की इच्छा न कर। न किसी के स्पर्श करने की कामना कर। किसी की गन्ध तक मत ले और न उसके अतिरिक्त किसी का ध्यान कर। तू भ्रम-जाल में फँसेगा तो उस परमात्मा के हाथों हानि उठायेगा।

: ३० :

तोता और गंजा फ़क़ीर

एक पंसारी के यहाँ तरह-तरह की बोलियाँ बोलनेवाला एक अत्यन्त सुन्दर तोता था। वह तोता दुकान की देख-रेख करता और प्यारी-प्यारी बोलियाँ बोलकर आने-जानेवालों का मनोरंजन किया करता था। एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि मालिक अपने घर गया हुआ था और तोता दुकान की निगरानी कर रहा था। इतने में एक बिल्ली चूहे पर झपटी, तोता अपनी जान बचाने के लिए जैसे ही एक तरफ़ को भागा, तो दौड़-धूप में बादाम रोग़न की कुछ बोतलें लुढ़क गयीं जब मालिक घर से आया तो देखा कि तेल के छींटों से तमाम फर्श चिकना हो गया है। पंसारी ने खफ़ा होकर तोते को ऐसी चोट मारी कि उसके सिर के बाल उड़ गये। इस रंज की वजह से तोते ने बोलना-चालना बिल्कुल छोड़ दिया। पंसारी अपने इस आचरण पर पश्चाताप करने लगा। वह बार-बार अपने जी में कहता कि क्या ही अच्छा होता, यदि मेरे हाथ उस घड़ी से पहिले ही टूट जाते जिस समय मैंने इस तोते को मारा था।

पंसारी ने अनेक प्रयत्न किये कि तोता बोलने लगे, परन्तु इस पत्ती ने एक शब्द तक भी अपने मुँह से नहीं निकाला। इसी तरह कई दिन गुज़र गये, पंसारी अपनी दुकान पर बैठा हुआ इसी चिन्ता में मग्न था और सोचता था कि मेरा तोता कभी बोलेगा भी या नहीं, इतने में ही एक साधु सिर घुटाये हुए इस तरफ़ से निकले।

तोते ने तुरन्त साधु पर कटात्त किया और कहा कि ओ गंजे, शायद तूने भी तेल की बोतल गिरायी है जो तुझे गंजा होना पड़ा। सुननेवाले खूब हँसे कि लो साहब यह तोता साधु को भी अपने समान समझता है।

अपनी दशा के अनुसार संसार के अन्य सज्जन मनुष्यों और महा-पुरुषों की हालत का अन्दाज़ नहीं करना चाहिए। अक्सर ऐसा हुआ है कि लोगों ने महान आत्माओं को नहीं पहचाना, उनके उपदेशों पर अमल नहीं किया और पथ-भ्रष्ट हो गये।

: ३१ :

दूरदर्शी

एक आदमी सोना तोलने के लिए सुनार के पास तराजू माँगने आया। सुनार ने कहा—"मियाँ, अपना रास्ता लो। मेरे पास छलनी नहीं है।" उसने कहा मजाक न कर, भाई मुझे तराजू चाहिए। सुनार ने कहा मेरी दुकान में झाड़ू नहीं है। उसने कहा मसखरी को छोड़ दे, मैं तराजू माँगने आया हूँ वह देदे और बहरा बन कर ऊटपटाँग बातें न कर। सुनार ने जवाब दिया—"हजरत मैंने तुम्हारी बात सुन ली थी, मैं बहरा नहीं हूँ। तुम यह न समझो कि मैं गोलमाल कर रहा हूँ। तुम बूढ़े आदमी सूखकर काँटा हो रहे हो। सारा शरीर काँपता है। तुम्हारा सोना भी कुछ बुरादा है और कुछ चूरा है। इसलिए तोलते समय तुम्हारा हाथ काँपेगा और सोना गिर पड़ेगा तो तुम फिर आओगे कि भाई जरा झाड़ू तो देना ताकि मैं सोना इकट्ठा कर लूँ और जब बुहार कर मिट्टी और सोना इकट्ठा कर लोगे तो फिर कहोगे कि मुझे छलनी चाहिए ताकि खाक को छानकर सोना अलग कर दूँ। हमारी दुकान में छलनी कहाँ? मैंने पहले ही तुम्हारे काम के अन्तिम

परिणाम को देखकर कहा था कि आप कहीं दूसरी जगह से तराजू माँग लायें।"

जो मनुष्य केवल काम के प्रारम्भ को देखता है वह अन्धा है। जो परिणाम को ध्यान में रक्खे वह बुद्धिमान है। जो मनुष्य आगे होने-वाली बात को पहले ही से सोच लेता है उसे अन्त में लज्जित नहीं होना पड़ता।

: ३२ :

काँटों की झाड़ी

एक मुँह के मीठे और दिल के खोटे मनुष्य ने रास्ते के बीच में काँटों की झाड़ी उगने दी। जो पथिक उधर से निकलता वही धिक्कार कर कहता कि इसको उखाड़ दे; लेकिन उसको उखाड़ना नहीं था; न उखाड़ा। इस झाड़ी की यह दशा थी कि प्रत्येक पल बढ़ती जाती थी और लोगों के पैर काँटे चुभने से लहू-लुहान हो जाते। जब हाकिम को इस बात की ख़बर पहुँची और इस मनुष्य के पूर्ण आचरण का ज्ञान हुआ तो उसने झाड़ी को तुरन्त उखाड़ देने की आज्ञा दी। इसपर भी वह मनुष्य न माना और जवाब दिया कि किसी फ़ुर्सत के दिन उखाड़ डालूँगा। इस तरह बराबर टालमटोल करता रहा। यहाँ तक कि झाड़ी ने खूब मजबूत जड़ पकड़ ली।

एक दिन हाकिम ने कहा—"ऐ प्रतिज्ञा भंग करनेवाले! हमारी आज्ञा का पालन कर, बस अब एड़ियाँ न रगड़। तू जो रोज कल का वादा करता है। यह समझ ले कि जितना अधिक समय गुज-रता जायेगा उतना ही अधिक बुराई का वृक्ष पनपता जायेगा।

और उखाड़नेवाला बुड्ढा और भी कमजोर होता जायेगा। पेड़ मजबूत और बड़ा होता जाता है, अत्यन्त शीघ्रता कर और मौके को हाथ से न जाने दे।

मनुष्य की हर बुरी आदत काँटों की झाड़ी है। वह अनेक बार अपने आचरणों पर लज्जित होकर पश्चात्ताप करता है। वह अपनी आदतों से स्वयं भी तंग आ जाता है, फिर भी उसकी आँखें नहीं खुलतीं। दूसरों के कष्ट जो उसके ही स्वभाव के कारण हैं यदि वह उनकी परवाह नहीं करता तो न सही; लेकिन उसे अपने घाव का अनुभव तो होना ही चाहिए।

: ३३ :

मन को मार

एक आदमी ने अपनी स्त्री को मार डाला। परिचितों ने कहा—"अरे दुष्ट! तूने अपनी स्त्री को मार डाला और उसकी सेवा को भूल गया। हाय हाय, अरे अभागे! भला बता तो सही स्त्री-हत्या का पाप किसी भी जन्म में धो सकेगा? बता तो बात क्या थी और उसने क्या अपराध किया था? वह बोला—"उसने वह किया कि जिसमें उसकी बदनामी थी और मैंने उसको इसलिए मार डाला कि मिट्टी इसके दोषों को छिपा लेगी। इसका एक आदमी से अनुचित सम्बन्ध था इसलिए मैंने उसको मार डाला और खून में लिथड़ी हुई उसकी लाश को क़ब्र की मिट्टी में छिपा दिया।"

उस आदमी ने कहा—"ऐसा लज्जाशील था तो उस दुराचारी आदमी को क्यों नहीं मार डाला?" जवाब दिया—"फिर तो प्रति दिन एक मनुष्य का वध करना पड़ता। बस उसको मारकर मैं रोज-रोज के रक्तपात से बच गया। उस अकेली का गला काटना बहुत से लोगों के गले काटने से अच्छा था।"

मन उस दुराचारिणी स्त्री के समान है जिससे सारा वातावरण दूषित हो रहा है। अत: उसको मारना चाहिए। अर्थात् वश में करना चाहिए क्योंकि इस दुष्ट कुत्ते के कारण हर घड़ी किसी न किसीसे लड़ाई होने का अंदेशा है। मन की वासनाओं के कारण यह सुखमय संसार दुखदायी बना हुआ है। यदि मन और इन्द्रियों को वश में कर लिया जाये तो दुख और सुख पास न आयें और सारा संसार मित्र बनकर रहे।

: ३४ :

'तू' और 'मैं'

एक मनुष्य अपने प्रेमपात्र के दरवाजे पर आया और कुंडी खटखटायी। प्रेमपात्र ने पूछा—कौन है? बाहर से जवाब मिला—'मैं' हूँ। प्रेमपात्र ने कहा—तुम्हें लौट जाना चाहिए अभी भेंट नहीं हो सकती। तुझ जैसी कच्ची चीज़ के लिए यहाँ स्थान नहीं। उसने समझा प्रेमपात्र का मुझसे अपमान हुआ है।

यह जवाब सुनकर वह बेचारा प्रेमी निराश होकर अपने प्रेमपात्र के द्वार से लौट गया। बहुत दिनों तक वियोग की आग में जलता रहा। अन्त में उसे फिर प्रेमपात्र से मिलने की उत्कण्ठा हुई और उसके द्वार पर चक्कर काटने लगा। कहीं फिर कोई अपमानसूचक शब्द मुँह से न निकल जाये, इसलिए उसने डरते-डरते कुंडी खटखटायी। प्रेमपात्र ने भीतर से पूछा—दरवाजे पर कौन है? उसने उत्तर दिया—ऐ मेरे प्यारे 'तू' ही है। प्रेम-पात्र ने आज्ञा दी कि अब जबकि 'तू' 'मैं' ही है, तो अन्दर चला आ।

एकता में दो की गुञ्जाइश नहीं। जब एक ही एक है तो फिर दुई कहाँ?

: ३५ :

वैयाकरण और मल्लाह

एक वैयाकरण नाव में सवार था। वह घमंड में भरकर मल्लाह से कहने लगा--क्या तुमने व्याकरण पढ़ा है ? मल्लाह बोला-नहीं।

वैयाकरण ने कहा अफ़सोस है कि तूने अपनी आधी उम्र यों ही गँवा दी !

माँझी को बड़ा क्रोध आया। लेकिन उस समय वह कुछ नहीं बोला। दैवयोग से वायु के प्रचंड झोकों ने नाव को भँवर में ला डाला।

नाविक ने ऊँचे स्वर में वैयाकरण से पूछा—महाराज आपको तैरना भी आता है कि नहीं ? वैयाकरण ने कहा--नहीं मुझे तैरना नहीं आता।

नाविक ने कहा—वैयाकरण, तेरी सारी उम्र बरबाद हो गयी क्योंकि नाव अब भँवर में डूबनेवाली है।

मनुष्य को किसी एक विद्या या कला में दक्ष हो जाने पर गर्व नहीं करना चाहिए।

: ३६ :

ईंट की दीवार

एक नदी के किनारे पर ऊँची दीवार थी। उसपर एक प्यासा आदमी बैठा हुआ था। बिना पानी के उसके प्राण निकले जा रहे थे। दीवार पानी तक पहुँचने में रुकावट डालती थी और वह प्यास के मारे व्याकुल हो रहा था। उसने दीवार की एक ईंट उखाड़कर पानी में जो फेंकी तो पानी की आवाज़ कान में आयी। वह आवाज़ भी उसे ऐसी प्यारी लगी जैसे प्रेमपात्र की आवाज़ होती है। इसी एक आवाज़ ने शराब की सी मस्ती पैदा करदी। उस दुखियारे को पानी की ध्वनि में इतना आनन्द आया कि वह दीवार में से ईंटें उखाड़-उखाड़कर पानी में फेंकने लगा। पानी की यह दशा थी मानो वह कह रहा है कि ऐ भद्र पुरुष! भला मेरे ईंटें मारने से तुझे क्या लाभ? प्यासा भी मानो अपनी दशा से यह प्रगट कर रहा था कि मेरे इसमें दो लाभ हैं इस-लिए मैं इस काम से कभी हाथ नहीं रोकूँगा। पहला लाभ तो पानी की आवाज़ का सुनना है। यह प्यासों के लिए रबाब (एक प्रकार का बाजा) की आवाज़ से अधिक मधुर है। दूसरा लाभ

यह है कि जितनी ईंटें मैं इस दीवार की उखाड़ता जाता हूँ उतना ही निर्मल जल के निकट होता जाता हूँ क्योंकि इस ऊँची दीवार से जितनी ईंटें उखड़ती जायेंगी, उतनी ही भींत नीची होती चली जायेगी। अतः दीवार का नीचा होना पानी के निकट होना है।

ईंटों की चिनाई का उखाड़ना वन्दना (प्रणति) है। जबतक इस दीवार की गर्दन ऊँची है वह सिर को झुकाने नहीं देती। अतः जबतक इस पंच-भौतिक शरीर से मुक्ति न प्राप्त हो अमृत (अमर जीवन) के आगे सिर नहीं झुक सकता। इस यौवन के महत्त्व को समझकर सिर झुकाना चाहिए और बुढ़ापा आने से पहले यानी उस समय से पहले जब कि तेरी गर्दन बढ़ी हुई रस्सी से बँध जायेगी और बुरी आदतों की जड़ें ऐसी मज़बूत हो जायेंगी कि उनके उखाड़ने की ताक़त न रहे। अपनी दीवार (दुर्वासनाओं) के ढेलों और ईंटों को उखाड़कर फेंक दे।

सस्ता साहित्य मण्डल
के विविध प्रकाशन

१. जवाहरलाल नेहरू : श्री रामनाथ 'सुमन'
(संक्षिप्त जीवनी और शब्द-चित्र) =)

२. मोतीलाल नेहरू : श्री रामनाथ 'सुमन'
(संक्षिप्त जीवनी और शब्द-चित्र) ।)

३. सप्त-सरिता : श्री काका कालेलकर
(भारत की सात लोकमाताओं —नदियों—
का सुन्दर परिचय) =)

४. चारा-दाना और उसको खिलाने के उपाय :
श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त
(पशुओं के चारे-दाने पर प्रामाणिक पुस्तक) ≡)

५. पशुओं का इलाज : श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त
(पशु चिकित्सा पर प्रामाणिक पुस्तक) ॥)

६. उपनिषदों की कथाएँ : श्री शंकर दत्तात्रेय देव
(उपनिषदों में से दस रोचक कथाएँ) ।)

७. आदर्श बालक : श्री चतुरसेन शास्त्री ॥)
(संसार के वीर और आदर्श बालकों की रोचक कथाएँ)

८. रूमी की कहानियाँ : अनुवादक: श्री शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य
(आपके हाथ में है) ॥)

——